RNI No. MPHIN/2015/64451 डाक पंजीयन क्र. MP/IDC/1525/2019-2021 IPT डाक द्वारा प्रेषण प्रति शुक्रवार indianplasttimes@gmail.com
www.Indianplasttimes.in

इंडियन प्लास्ट टाइम्स

■ INDORE ■ 19 FEBRUARY TO 25 FEBRUARY 2020 ■ प्रति बुधवार ■ वर्ष 05 ■ अंक 26 ■ पृष्ठ 8 ■ कीमत 5 रु.

Inside News

चीन में कोरोना वायरस प्रभावित मृतकों की संख्या 2 हजार पार
Page 3

भारत में 70 फीसदी तक बढ़े जरूरी दवाइयों के दाम
Page 4

डी.पी.ज्वेलर्स के इंदौर स्थित शोरूम पर किया गया फॉरएवरमार्क का भव्य लॉन्च
Page 5

editoria!

महंगाई की मार, अब तो कुछ करे सरकार

तमाम कोशिशों के बावजूद महंगाई के मोर्चे पर नाकामी ही सरकार के हाथ आ रही है। खाने-पीने की चीजें महंगी होने से जनवरी में खुदरा महंगाई दर बढ़कर 7.59 फीसदी पर पहुंच गई, जो बीते 6 सालों का उच्चतम स्तर है। देश में खुदरा महंगाई दर मई 2014 के बाद के सबसे ऊंचे स्तर पर चली गई है। यह लगातार छठा महीना है, जब महंगाई दर में बढ़ोतरी देखी गई है। इससे पहले दिसंबर में खुदरा महंगाई दर 7.35 फीसदी रही थी। थोक कीमतों पर आधारित मुद्रास्फीति की दर भी जनवरी में बढ़कर 3.1 प्रतिशत हो गई है, जो इससे पहले वाले महीने में 2.59 प्रतिशत थी। महंगाई में यह इजाफा मुख्यत: प्याज और आलू जैसी रोजमर्रा की खाद्य वस्तुओं की कीमतों में बढ़ोतरी के चलते हुआ है। पिछले कुछ हफ्तों में आए आर्थिक आंकड़ों से ऐसा लग रहा था कि अर्थव्यवस्था अब सुस्ती से उबर रही है, लेकिन महंगाई और औद्योगिक उत्पादन के आंकड़ों से एक बार फिर चिंता बढ़ गई है। केंद्रीय सांख्यिकी कार्यालय (सीएसओ) के आंकड़ों के अनुसार जनवरी में खाद्य पदार्थों की खुदरा महंगाई दर 13.63 फीसदी रही। सब्जियों, दालों, मांस-मछली और अंडों के दाम में सबसे तेज बढ़ोतरी हुई। लगातार तीसरे महीने खाद्य खुदरा महंगाई दर दहाई अंक में रही है। नवंबर 2019 में यह 10.01 फीसदी और दिसंबर 2019 में 14.19 फीसदी थी। दूसरी तरफ देश के विनिर्माण क्षेत्र में नरमी रहने के कारण दिसंबर 2019 के दौरान औद्योगिक उत्पादन में 0.3 फीसदी की गिरावट आई। साल भर पहले इसी महीने में देश के औद्योगिक उत्पादन में 2.5 फीसदी की वृद्धि दर्ज की गई थी। बहरहाल, खुदरा महंगाई दर बढ़ने के पीछे सबसे बड़ी वजह खाने-पीने की चीजों की कीमतों में बढ़ोतरी है। एक ओर आम जनता महंगाई की मार से त्रस्त है तो दूसरी ओर पेट्रोलियम कंपनियों ने देश के उपभोक्ताओं को बड़ा झटका देते हुए रसोई गैस सिलिंडर के दाम में भारी इजाफा कर महंगाई का डबल डोज दिया है। बिना सब्सिडी के 14.2 किलोग्राम वाले सिलेंडर का दाम लगभग डेढ़ सौ रुपये बढ़ा दिया गया है, जिससे गृहिणियों की रसोई का बजट बिगड़ेगा। इसके लिए अब उपभोक्ताओं को दिल्ली, कोलकाता, मुंबई और चेन्नै में क्रमश: 144.50 रुपये, 149 रुपये, 145 रुपये और 147 रुपये अधिक देने पड़ेंगे। जब से मोदी सरकार का मौजूदा कार्यकाल शुरू हुआ है, तब से अर्थव्यवस्था के विकास की दर लगातार नीचे गिर रही है, जबकि आर्थिक सुस्ती के इस माहौल में तकरीबन सभी चीजें महंगी होती जा रही हैं। गौरतलब है कि कुल महंगाई में खुदरा महंगाई का योगदान करीब 50 फीसदी का होता है। ऐसा नहीं है कि महंगाई का कहर देश में पहली बार टूटा है। महंगाई पहले भी आती रही है, जरूरी चीजों के दाम पहले भी अचानक बढ़ते रहे हैं, लेकिन थोड़े समय बाद वे नीचे भी आ जाते रहे हैं। मगर इस समय तो मानो बाजार में आग लगी हुई है। चुनिंदा वस्तुओं और सेवाओं की कीमतों में कमी या बढ़ोतरी से महंगाई दर तय होती है। रिटेल इन्फ्लेशन यानी खुदरा महंगाई दर वह दर है जो जनता को सीधे तौर पर प्रभावित करती है। लगता है, महंगाई को काबू में रखने के प्रयासों में कहीं न कहीं सरकार की ओर से कोई कमी रह जा रही है। बीते साढ़े पांच सालों से सरकार दावा कर रही है कि मूल्यवृद्धि पर काबू पा लिया गया है, मगर अभी तो इसका नतीजा सिफर ही नजर आ रहा है। अधिक मांग का दबाव न होने और फसलें भी भरपूर होने के बावजूद कीमतें इस तरह छलांगें क्यों मार रही हैं?

कोरोना का असर

एक महीने में 20 फीसद गिरा कच्चा तेल

पेट्रोल हो सकता है 4 रुपये तक सस्ता

नई दिल्ली। एजेंसी

चीन में फैले घातक कोरोना वायरस से चलते अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की मांग में भारी कमी आई है। इंटरनेशनल एनर्जी एजेंसी(आईईए) का अनुमान है कि इस साल की पहली तिमाही में कच्चे तेल की वैश्विक खपत पिछले साल के मुकाबले 4.35 लाख बैरल घट सकती है। मांग घटने से कच्चे तेल की कीमतें में बड़ी गिरावट आएगी। ऊर्जा विशेषज्ञों का कहना है कि इसका फायदा भारतीय उपभोक्ताओं को मिलेगा। पिछले एक महीने में पेट्रोल के दाम दो रुपये कम हो चुके हैं। अगले दो हफ्ते में पेट्रोल चार रुपये तक और सस्ता हो सकता है।

डिप्टी वाइस प्रेसिडेंट (एनर्जी एवं करेंसी) जेल ब्रोकिंग अनुज गुप्ता ने बताया कि कोरोना वायरस के चलते बेंट क्रूड का भाव 56 डॉलर प्रति बैरल से गिरकर 50 डॉलर प्रति बैरल तक पहुंच सकता है। वहीं, न्यूयार्क मर्केंटाइल एक्सचेंज (नायमैक्स) पर अमेरिकी लाइट क्रूड 52.23 डॉलर प्रति बैरल से गिरकर 48 डॉलर प्रति बैरल तक पहुंच सकता है। इसका फायदा भारतीय तेल बाजार को मिलेगा। अगले दो हफ्ते में पेट्रोल के भाव में चार रुपये तक की गिरावट देखने को मिल सकती है। डीजल के भाव में भी इसी अनुपात में गिरावट आएगी।

(शेष पृष्ठ 2 पर)

कोरोना वाइरस से विकास दर 20 पॉइंटस तक गिर सकती है, फिर आएगी तेजी: क्रिस्टालिना जॉर्जीवा

दुबई। एजेंसी

अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) की प्रमुख ने रविवार को कहा कि इस साल कोरोना वायरस से फैली महामारी वैश्विक आर्थिक वृद्धि को नुकसान पहुंचा सकती है, लेकिन इसके बाद तेजी से आर्थिक सुधार देखने को मिल सकता है। आईएमएफ की प्रबंध निदेशक क्रिस्टालिना जॉर्जीवा ने दुबई में 'ग्लोबल वीमेंस फोरम' में बताया कि विकास दर में गिरावट आ सकती है, हमारा अनुमान है कि यह गिरावट 0.1-0.2 प्रतिशत के आसपास होगी।'

उन्होंने कहा कि इस बीमारी से पहले ही बहुत लोगों की मौत हो चुकी है और इसका पूरा असर इस बात पर निर्भर करता है कि बीमारी पर कितनी जल्दी काबू पाया जाता है। जॉर्जीवा ने कहा, 'मैं सभी को यह सलाह दूंगी कि जल्दबाजी में किसी निष्कर्ष तक न पहुंचे। अभी भी अनिश्चितता में बहुत कुछ छिपा हुआ है। हम पूर्वानुमानों में नहीं, बल्कि परिदृश्यों के साथ काम करते हैं, मुझसे 10 दिन बाद पूछिए।'

परिवहन और पर्यटन उद्योग पर दिख रहा असर

उन्होंने कहा कि महामारी के असर का पूरा मूल्यांकन करना अभी 'बहुत जल्दी' होगा, लेकिन उन्होंने माना कि इससे पर्यटन और परिवहन जैसे क्षेत्र पहले ही प्रभावित हो चुके हैं। उन्होंने कहा, 'इस बारे में कुछ भी कहना अभी जल्दबाजी होगी, क्योंकि हम नहीं जानते हैं कि ये वायरस कैसा है। हम नहीं जानते हैं कि चीन इस पर कितनी जल्दी काबू पा लेगा। हम नहीं जानते हैं कि क्या यह बाकी दुनिया में फैलेगा।' उन्होंने कहा कि अगर इस पर 'तेजी से काबू पा लिया जाता है' तो तेजी से गिरावट और तेजी से उछाल आ सकता है, जिसे 'वी-प्रभाव' कहा जाता है।

वैश्विक संकेतों से वायदा बाजार में कच्चा तेल 1.33 प्रतिशत मजबूत

नयी दिल्ली। एजेंसी

हाजिर मांग में वृद्धि के बीच सटोरियों के सौदे बढ़ाने से बुधवार को वायदा बाजार में कच्चा तेल का भाव 49 रुपये मजबूत होकर 3,747 रुपये प्रति बैरल पर पहुंच गया। मल्टी कमोडिटी एक्सचेंज में फरवरी महीने की डिलिवरी वाले कच्चा तेल का भाव 49 रुपये यानी 1.33 प्रतिशत की तेजी के साथ 3,747 रुपये प्रति बैरल हो गया। इसमें 31,058 लॉट के लिये कारोबार हुआ। इसी तरह मार्च महीने में डिलिवरी वाले अनुबंध का भाव 48 रुपये यानी 1.28 प्रतिशत की तेजी के साथ 3,786 रुपये प्रति बैरल हो गया। इसमें 8,868 लॉट के लिये कारोबार हुआ। वैश्विक स्तर पर, न्यूयॉर्क में वेस्ट टेक्सास इंटरमीडिएट की कीमत 0.83 प्रतिशत की तेजी के साथ 52.48 डॉलर प्रति बैरल हो गयी। हालांकि ब्रेंट क्रूड 0.74 प्रतिशत घटकर 58.18 डॉलर प्रति बैरल रह गया।

सऊदी से तेल निर्यात में गिरावट, सामने आए चौंकाने वाले आंकड़े

■2018 के मुकाबले 2019 में सऊदी का OIL और Petro Products Export करीब 11 फीसदी गिरा ■2019 में सऊदी अरब का क्रूड ऑयल का औसत निर्यात 7.4 मीलियन बैरल प्रति से ज्यादा नहीं हुआ ■ ईरान से प्रतिबंध घटने और अमरीका के प्रोडक्शन बढ़ाने की वजह से सऊदी को लगा है झटका

नई दिल्ली। एजेंसी

अगर कच्चे तेल यानी क्रूड ऑयल का जिक्र आता है तो सबसे पहले नाम सऊदी अरब का आता है। ओपेक लीड करने वाले इस देश में तेल के भंडार अकूत मात्रा में है। इसलिए मिडिल ईस्ट के इस देश ने काफी जल्दी तरक्की भी की है। क्रूड ऑयल मार्केट में एकतरफा मोनोपॉली हासिल की है। वहीं कुछ सालों में सऊदी अरब को काफी कठिनाईयों का सामना करना पड़ा है। जिसका असर क्रूड पर उसकी बादशाहत पर भी पड़ा है। ज्वाइंट ऑर्गनाइजेशल डाटा इनिशिएटिव (JODI) की ताजा रिपोर्ट और आंकड़ों के अनुसार सवाल खड़ा हो गया है कि क्या सऊदी अरब की बादशाहत खत्म हो गई है? यह सवाल इसलिए भी है क्योंकि जो आंकड़े सामने आए हैं वो बेहद चौंकाने वाले है।

पढ़िए पूरी डिटेल रिपोट.

हैरान करने वाले हैं JODI के आंकड़े

साल दर साल के हिसाब से 2019 में सऊदी अरब का ऑयल एक्सपोर्ट 11 फीसदी गिरा है। 2019 में ऑयल एक्सपोर्ट (क्रूड ऑयल और पेट्रो प्रोडक्ट्स भी शामिल) औसतन 8.339 मीलियन बैरल प्रतिदिन था। जबकि 2018 में ऑयल एक्सपोर्ट (क्रूड ऑयल और पेट्रो प्रोडक्ट्स भी शामिल) औसतन 9.344 मीलियन बैरल प्रतिदिन था। महीने दर महीने के हिसाब से सऊदी अरब के क्रूड ऑयल एक्सपोर्ट दिसंबर 2019 में 7.37 मीलियन बैरल प्रति दिन में कोई बदलाव नहीं हुआ। 2019 में किसी भी महीने में सऊदी अरब के क्रूड ऑयल एक्सपोर्ट 7.4 मीलियन बैरल प्रति दिन से ज्यादा कभी नहीं रहा। सितंबर 2019 में सऊदी अरामको पर हमले की वजह से ऑयल एक्सपोर्ट 6.67 मीलियन बैरल प्रति दिन पर चला था जो 22 महीने का निचला स्तर था। उस दौरान प्रति दिन के हिसाब से एक हफ्ते के लिए ग्लोबल सप्लाई 5 फीसदी कम हो गई थी।

यह बन रही है सबसे बड़ी वजह

जब से ईरान का मसला हल्का पड़ा है और अमरीकी प्रतिबंध कम हुए हैं, तब से ईरान की ओर ऑयल प्रोडक्शन कम हो गया है। ईरान के पुराने ग्राहक फिर से सऊदी को छोड़ ईरान की ओर से मूव कर गए हैं। जिसका असर सऊदी के एक्सपोर्ट पर पड़ा है। वहीं कुछ देश जो ओपेक से नाराज हुए हैं उन्होंने भी ईरान और दूसरे देशों से समझौते कर ऑयल इंपोर्ट करना शुरू कर दिया है। जिसका असर सऊदी अरब पर सबसे ज्यादा देखने को मिला है। मौजूदा समय में ईरान के ऑयल कारोबार पर नजर दौड़ाए तो जनवरी 2020 में 2.086 मीलियन बैरल प्रति दिन का प्रोडक्शन किया था। जिसमें से 1.7 मीलियन बैरल प्रति दिन वो अपने देश में ही कंज्यूम कर रहा है। बाकी वो एक्सपोर्ट कर रहा है।

अमरीका इंपोर्टर से एक्सपोर्टर बना

वहीं दूसरी ओर अमरीकी नीतियों का भी सऊदी अरब की क्रूड ऑयल की बादशाहत पर काफी असर डाला है। पांच पहले की बात करें तो अमरीका दुनिया के सबसे बड़े क्रूड ऑयल इंपोर्टर में से एक था। क्रूड ऑयल की कीमतों का असर उसकी जीडीपी पर भी दिखाई देता है। अब स्थितियों में काफी बदलाव देखने को मिला है। पांच साल में अमरीका ने क्रूड ऑयल के मामले में अपने आपको सिर्फ सेल्फ एफिशिएंट ही नहीं बनाया बल्कि अपने आपको बड़ा एक्सपोर्टर भी बना लिया है। अब जब ओपेक क्रूड ऑयल की कीमतों को बढ़ाने के लिए प्रोडक्शन कम करता है तो अमरीका अपने मित्र देशों के लिए ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया के लिए इंवेंट्रीज खोल देता है। जिसकी वजह से क्रूड ऑयल की कीमतों पर कम असर देखने को मिलता है। 2019 नवंबर के आंकड़ों के अनुसार अमरीका 3.19 मीलियन बैरल प्रति दिन के हिसाब से क्रूड ऑयल एक्सपोर्ट कर रहा है।

कोरोना वायरस का असर

वहीं दूसरी ओर क्रूड ऑयल मार्केट में कोरोना वायरस का असर भी देखने को मिल रहा है। ब्ब्ब्ध की रिपोर्ट में भी इसका जिक्र किया गया है। साथ ही रेटिंग एजेंसी भी इस बात का जिक्र कर चुकी हैं कि कोरोना वायरस की वजह से दुनिया की जीडीनी में एक फीसदी की गिरावट देखने को मिल सकती है। वहीं दूसरी ओर क्रूड ऑयल की डिमांड भी कम होगी। ऐसे में साफ है कि डिमांड कम होने के कारण सऊदी अरब का एक्सपोर्ट कम होगा। मौजूदा समय में कोरोना वायरस का सबसे ज्यादा असर चीन में देखने को मिल रहा है। जो दुनिया का सबसे बड़ा क्रूड ऑयल इंपोर्टर है।

इलेक्ट्रिक व्हीकल पर जोर

दुनियाभर के देश अब पेट्रोल और डीजल की कंजप्शन को कम करने के लिए इलेक्ट्रिक व्हीकल की ओर मूव कर रहे हैं। टेस्ला, फोक्सवैगन और मोरिस गैरिजेस जैसी कंपनियां दुनिया में इलेक्ट्रिक कारों के अलावा ट्रक और बाकी हैवी व्हीकल तैयार करके दे रही हैं। वहीं भारत भी इलेक्ट्रिक व्हीकल की पॉलिसी पर काम ही नहीं कर रहा है बल्कि उस पर इनिशिएटिव भी ले रहा है। हाल ही में हुए ऑटो एक्सपो 2020 में इलेक्ट्रिकल व्हीकल्स का ज्यादा जोर देखने को मिला है। मतलब साफ है कि आने वाले दिनों में व्हीकल के लिए क्रूड ऑयल का इंपोर्ट करना काफी होगा। जिसका असर सऊदी अरब के एक्सपोर्ट में देखने को मिलेगा।

एक महीने में 20 फीसद गिरा कच्चा तेल

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

एक दशक में पहला मौका

आईईए ने अपनी हालिया रिपोर्ट में 2020 की पहली तिमाही में तेल की वैश्विक मांग अनुमान में पिछले साल के मुकाबले 4.35 लाख बैरल की कटौती की है। बीते एक दशक में यह पहला मौका होगा, जब तेल की सालाना मांग में कमी दर्ज की जाएगी। इससे पहले एजेंसी ने तेल की खपत मांग में पिछले साल के मुकाबले आठ लाख बैरल रोजाना का इजाफा होने का अनुमान लगाया था। आईईए के अनुसार, 2020 में पूरे साल के दौरान तेल की मांग में वृद्धि महज 8.25 लाख बैरल रोजाना होने का अनुमान है, जोकि पिछले अनुमान से 3.65 लाख बैरल कम है। इस प्रकार 2011 के बाद तेल की सालाना मांग में यह सबसे कम वृद्धि होगी।

ओपेक की कटौती का असर भी नहीं होगा

ऊर्जा विशेषज्ञ नरेंद्र तनेजा ने बताया कि तेल उत्पादक देशों का संगठन ओपेक और रूस द्वारा कच्चे तेल के उत्पादन में अतिरिक्त कटौती करने के संकेत दिए हैं। लेकिन इसका असर अंतरराष्ट्रीय तेल बाजार पर आने की उम्मीद नहीं है। इसकी वजह है कि मौजूदा समय में तेल की कीमतें चीन और भारत की ओर से मांग के आधार पर तय होती है। चीन में कोरोना वायरस के चलते मांग में बड़ी कमी आई है। अभी तक कोरोना वायरस पर लगाम लगाने में चीन असफल रहा है। इससे चीन की अर्थव्यवस्था बुरी तरह प्रभावित हुई है। अगर, कोरोना का कहर चीन से बाहर के देशों में होता है तो यह पूरी दुनिया की अर्थव्यवस्था को अपने जद में ले सकता है।

ऐसी स्थिति में तेल की मांग में बड़ी कमी आएगी। इससे कच्चे तेल की कीमतें में बड़ी कमी देखने को मिल सकती है। हालांकि, तस्वीर अगले 10 दिनों में साफ हो जाएगी लेकिन अभी भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए अच्छी खबर है। कच्चे तेल के दाम में गिरावट जारी रहने से भारतीय बाजार में पेट्रोल-डीजल सस्ता होगा। तीन से चार रुपये की कटौती अगले 10 दिनों में देखने को मिल सकती है। वहीं, कोरोना का कहर लंबा चलने का बुरा असर भारतीय अर्थव्यवस्था पर भी हो सकता है। रुपये की वैल्यू और निर्यात प्रभावित हो सकता है।

और नीचे जा सकता है कच्चे तेल

चीन में कोरोना वायरस के बढ़ते मामलों के बाद से क्रूड 5 दिनों में 6 डॉलर से ज्यादा टूटकर 58.50 डॉलर प्रति बैरल के स्तर पर आ गया है। क्रूड का यह स्तर 2 महीने का निचला स्तर है। जानकारों के अनुसार अगर कोरोना वायरस के मामले और बढ़ते हैं, तो क्रूड 55 डॉलर से 56 डॉलर प्रति बैरल के स्तर पर आ सकता है।

सेंसेक्स में 429 अंक का उछाल, निफ्टी में 133 प्वाइंट की तेजी

मुंबई। आईपीटी नेटवर्क

शेयर बाजार में पिछले चार सत्रों की गिरावट के बाद बुधवार को तेजी आई। सेंसेक्स 428.62 अंक की बढ़त के साथ 41,323 पर बंद हुआ। निफ्टी ने 133.40 प्वाइंट ऊपर 12,125.90 पर कारोबार खत्म किया। वोडाफोन-आइडिया के शेयर में 40% उछाल आया। एनएसई पर शेयर 1.20 रुपए की बढ़त के साथ 4.20 रुपए पर बंद हुआ। शेयर में अचानक आई तेजी पर बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज ने कंपनी से सफाई मांगी है। दूसरी ओर ऐसी रिपोर्ट है कि एजीआर मामले में बकाया राशि की वजह से सरकार वोडाफोन-आइडिया की बैंक गारंटी नहीं भुनाएगी। इस रिपोर्ट से कंपनी के शेयर में खरीदारी बढ़ गई।

एनएसई पर फार्मा इंडेक्स में सबसे ज्यादा 2.32% तेजी

सेंसेक्स के 30 में से 21 और निफ्टी के 50 में से 38 शेयर फायदे में रहे। एनएसई पर सभी 11 सेक्टर इंडेक्स बढ़त के साथ बंद हुए। फार्मा इंडेक्स में सबसे ज्यादा 2.32% उछाल आया। मीडिया इंडेक्स 1.94% ऊपर बंद हुआ।

1 अप्रैल से भारत में बिकेगा सबसे साफ पेट्रोल-डीजल

बीएस-6 वाहनों की ही बिक्री होगी

नई दिल्ली। एजेंसी

एक अप्रैल से दुनिया का सबसे साफ पेट्रोल-डीजल भारत में बिकेगा। भारत सबसे स्वच्छ पेट्रोल-डीजल अपनाने के लिये तैयार है और एक अप्रैल से नए उत्सर्जन मानक BS-6 के अनुकूल ईंधनों की आपूर्ति शुरू हो जाएगी। इंडियन ऑयल कॉरपोरेशन के एक वरिष्ठ अधिकारी ने यह दावा किया है। भारत ने वाहन उत्सर्जन कम करने के लिये बीएस-4 से सीधे भारत चरण-6 मानक पर अमल करने का निर्णय लिया था और महज तीन साल में इसे सफलता से अमल में लाने के करीब है। इससे भारत उन चुनिंदा देशों में शामिल हो जाएगा, जहां सबसे स्वच्छ पेट्रोल-डीजल का उपयोग होता है। इंडियन ऑयल के चेयरमैन संजीव सिंह ने कहा कि लगभग सभी परिशोधन संयंत्रों ने 2019 के अंत तक बीएस-6 के अनुकूल पेट्रोल और डीजल का उत्पादन शुरू कर दिया है। अब पेट्रोलियम कंपनियों ने देश में पेट्रोल-डीजल की आखिरी बूंद को बीएस-6 मानक वाले ईंधन से स्थानांतरित करने का बीड़ा उठा लिया है। सिंह ने कहा, ''हम एक अप्रैल से बीएस-6 ईंधनों की आपूर्ति करने की दिशा में पूरी तरह से सही राह पर हैं। लगभग सभी परिशोधन संयंत्रों ने बीएस-6 ईंधनों की आपूर्ति शुरू कर दी है और ये ईंधन देश भर में भंडार डिपो तक पहुंचने लगे हैं। उन्होंने कहा कि स्वच्छ ईंधन भंडार डिपो से पेट्रोल पंपों तक भी पहुंचने लगे हैं और अगले कुछ सप्ताह में सिर्फ स्वच्छ ईंधन ही उपलब्ध होंगे। उन्होंने कहा, ''हम इस बारे में पूरी तरह से आश्वस्त हैं कि पेट्रोल पंपों पर एक अप्रैल से जो भी पेट्रोल-डीजल बिकेंगे, वे बीएस-6 मानक के अनुकूल होंगे। भारत ने 2010 में बीएस-3 उत्सर्जन मानक को अपनाया था। बीएस-3 से बीएस-4 तक पहुंचने में देश को सात साल का समय लगा था। सरकारी परिशोधन कंपनियों ने नये मानक के अनुकूल ईंधन तैयार करने के लिये करीब 35 हजार करोड़ रुपये का निवेश किया है। बीएस-6 के अनुकूल पेट्रोल और डीजल में सल्फर की मात्रा महज 10 पीपीएम होती है। यह सीएनजी की तरह स्वच्छ माना जाता है। पहले योजना थी कि दिल्ली और आस-पास के शहरों में स्वच्छ ईंधन की आपूर्ति अप्रैल 2019 तक बहाल की जाएगी तथा देश भर में अप्रैल 2020 से आपूर्ति शुरू की जाएगी। हालांकि कंपनियों ने दिल्ली-एनसीआर में एक अप्रैल 2018 से ही नए मानक के अनुकूल ईंधन की आपूर्ति शुरू कर दी। इसके बाद एक अप्रैल 2019 से स्वच्छ ईंधन की आपूर्ति राजस्थान के चार और उत्तरप्रदेश के आठ सीमावर्ती जिलों समेत आगरा जिले में शुरू कर दी गयी। हरियाणा के सात जिलों में ये ईंधन एक अक्टूबर 2019 से उपलब्ध हो गए। सिंह ने कहा कि नये ईंधन से बीएस-6 अनुकूल वाहनों का नाइट्रोजन ऑक्साइड उत्सर्जन पेट्रोल कारों में 25 प्रतिशत तक और डीजल कारों में 70 प्रतिशत तक कम हो जाएगा।

दुनिया की 5वीं बड़ी इकोनॉमी बना भारत ब्रिटेन-फ्रांस को पछाड़ा

नई दिल्ली। एजेंसी

भारत की इकॉनमी (Indian Economy) के लिए कई दिनों बाद अच्छी खबर आई है। अमेरिका की शोध संस्थान वर्ल्ड पॉपुलेशन रीव्यू (World Population Review) ने एक रिपोर्ट जारी कर बताया कि भारत दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था वाला देश बन गया है। 2.94 ट्रिलियन डॉलर की इकोनॉमी के साथ भारत ने साल 2019 में ब्रिटेन और फ्रांस को पीछे छोड़ दिया है। आपको बता दें कि प्रधानमंत्री मोदी ने अगले पांच साल के भीतर भारत को 5 ट्रिलियन डॉलर की इकोनॉमी बनाने का लक्ष्य रखा है। वर्ल्ड पॉपुलेशन रीव्यू ने अपनी रिपोर्ट में कहा है कि आत्मनिर्भर बनने की पूर्व की नीति से भारत अब आगे बढ़ते हुए एक खुली बाजार वाली अर्थव्यवस्था के रूप में विकसित हो रहा है। न्यूज एजेंसी के मुताबिक, ब्रिटेन की अर्थव्यवस्था का आकार 2.83 ट्रिलियन डॉलर है, जबकि फ्रांस का 2.7 ट्रिलियन डॉलर है। क्रय शक्ति समानता (पीपीपी) के आधार पर भारत का जीडीपी 10.51 ट्रिलियन डॉलर है और यह जापान तथा जर्मनी से आगे है। हालांकि, भारत में अधिक आबादी के कारण प्रति व्यक्ति जीडीपी महज 2170 डॉलर है। अमेरिका में प्रति व्यक्ति जीडीपी 62,794 डॉलर है। रिपोर्ट में यह भी कहा गया कि भारत की रियल जीडीपी वृद्धि दर लगातार तीसरी तिमाही में कमजोर रह सकती है और 5 फीसदी के आसपास रह सकती है।

रिपोर्ट में कांग्रेस की भी तारीफ

रिपोर्ट में कहा गया है कि भारत में आर्थिक उदारीकरण (कांग्रेस के दौर में) 1990 की दशक में शुरू हुआ है। उद्योगों को नियंत्रण मुक्त किया गया और विदेशी व्यापार एवं निवेश पर पर नियंत्रण कम किया। साथ ही सरकारी कंपनियों का निजीकरण किया गया। इन उपायों से भारत को आर्थिक वृद्धि तेज करने में मदद मिली है। रिपोर्ट जारी करने वाला अमेरिकी का वर्ल्ड पॉपुलेशन रीव्यू एक स्वतंत्र संगठन है।

जीडीपी ग्रोथ के मामले में भारतीय अर्थव्यवस्था की स्थिति अच्छी नहीं है। हाल में कई रेटिंग एजेसियों ने भारत की जीडीपी ग्रोथ के अनुमान को घटा दिया है। रेटिंग एजेंसी मूडीज इनवेस्टर्स सर्विस ने वर्ष 2020 के लिए भारत के सकल घरेलू उत्पाद (GDP) ग्रोथ अनुमान को घटा दिया है। मूडीज ने यह अनुमान 6.6 फीसदी से घटाकर 5.4 फीसदी कर दिया है। इसके साथ ही मूडीज ने 2021 में जीडीपी बढ़त के अनुमान को भी 6.7 फीसदी से घटाकर 5.8 फीसदी कर दिया है।

कोरोना वायरस की वजह से वैश्विक अर्थव्यवस्था में सुस्तीः मूडीज

मूडीज ने कहा कि नोवेल कोरोना वायरस (Covid-19) के प्रकोप की वजह से वैश्विक अर्थव्यवस्था में जो सुस्ती आई है, उसकी वजह से भारत के जीडीपी ग्रोथ में तेजी की रफ्तार कम हो सकती है। उसने कहा कि भारत में अब किसी भी तरह के सुधार को उम्मीद से कम ही माना जाना चाहिए।

पूंजी बाजार 5000 अरब डालर की अर्थव्यवस्था के लक्ष्य में हो सकता है महत्वपूर्ण

नई दिल्ली। एजेंसी

वित्त राज्य मंत्री अनुराग ठाकुर ने शनिवार को कहा कि भारत का पूंजी बाजार मजबूत है और यह देश को 2025 तक पांच हजार अरब डालर की अर्थव्यवस्था बनाने में महत्वपूर्ण योगदान कर सकता है। बाजार में लोगों का विश्वास मजबूत करने की जरूरत पर बल देते हुए उन्होंने कहा कि पूंजी बाजार घरेलू बचतों को दीर्घकालिक वित्तीय पूंजी में परिवर्तित करने का रास्ता प्रदान करते हैं। ठाकुर ने कहा कि देश में पूंजी निर्माण के काम में प्रतिभूति बाजार (एक्सचेंज) और बिचौलिए महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। जरूर यह सुनिश्चित करने की है कि बाजार में घोटाले और धोखाधड़ी न हों ताकि बाजार के प्रति लोगों का विश्वास न टूटे। उन्होंने यहां पूंजी बाजार पर एक सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा कि ' वर्ष 2025 तक भारत को पांच हजार अरब डालर की अर्थव्यवस्था बनाने में पूंजी बाजार की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण होगी।' ठाकुर ने कहा कि "भारतीय बाजार मजबूत और बड़ा है तथा यह विश्व के अच्छे से अच्छे बाजार का मुकाबला कर सकता है।' उन्होंने कहा कि 'सरकार बाजार को नियंत्रणों से मुक्त करने और निवेशकों के लिए नियमों के अनुपालन आसान बनाने के लिए लगातार प्रयास करती रही है।' कार्यक्रम का विषय ' पूंजी बाजारों को पुनर्परिभाषित किया जाना- पांच हजार अरब डालर की अर्थव्यवस्था के लिए आवश्यक।' इसका आयोजन भारत के राष्ट्रीय एक्सचेंजों के सदस्यों के संघ (एएनएमआई) ने किया था। इसके शेयर ब्रोकर सदस्यों की संख्या करीब 900 है। इस अवसर पर उन्होंने पूंजी बाजारों में अनुपालन व्यवस्था की समीक्षा रपट भी जारी की। यह रपट तैयार करने के लिए उन्होंने सेबी, शेयर बाजारों और एएनएमआई की सराहना की। उन्होंने कहा कि इससे अनुपालन व्यवस्था आसान किए जाने में निश्चित रूप से मदद मिलेगी।

भारत-रूस कच्चा तेल आयात के दीर्घकालिक समझौते के लिए बातचीत के दौर में

नयी दिल्ली। एजेंसी

भारत और रूस ने कच्चे तेल के दीर्घकालिक आयात के लिए महत्वकांक्षी समझौते के लिए रुपरेखा को अंतिम रूप दे दिया है। दोनों देशों की सरकारों के बीच होने वाले इस समझौते के तहत रूस के सुदूर पूर्व इलाके से कच्चे तेल आयात किया जाएगा। सूत्रों ने बताया कि इस समझौते पर रूस के राष्ट्रपति व्लादिमिर पुतिन की भारत यात्रा के दौरान हस्ताक्षर हो सकते हैं। वह यहां प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ वार्षिक शिखर वार्ता करने पहुंचेंगे। इस समझौते से दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय व्यापार को 11 अरब डॉलर से बढ़ाकर 25 अरब डॉलर करने में मदद मिलने की उम्मीद है। इस संबंध में एक सवाल के जवाब में रूसी मिशन के उप प्रमुख रोमन बाबुश्किन कहा कि पिछले साल सितंबर में रूस के व्लादिवोस्तोक में पुतिन और मोदी के बीच हुई आखिरी शिखर वार्ता के अनुरूप दोनों देश तेल और गैस क्षेत्र में सहयोग बढ़ाने के लिए लिए 'बहु-आयामी' दृष्टिकोण अपना रहे हैं। बाबुश्किन ने कहा, "हमने कुछ समय पहले ही 20 लाख टन कच्चा तेल भारत को आपूर्ति करने के लिए एक समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं। यह तेल इस साल के अंत तक भारत पहुंचने लगेगा। हम कई सालों तक भारत को कच्चे तेल की दीर्घकालिक आपूर्ति के लिए एक और समझौता करने पर विचार कर रहे हैं।'उन्होंने कहा, "ऊर्जा क्षेत्र में एक भरोसेमंद साथी के तौर पर हमें अपनी क्षमताओं को आजमाना चाहिए। भारत और रूस के बीच साझा निवेश सहयोग के लिए अगला क्षेत्र ऊर्जा क्षेत्र होगा।"बाबुश्किन ने कहा कि रूस के सुदूर पूर्व इलाके में तेल एवं गैस की खोज के लिए भारतीय कंपनियों ने सकारात्मक रुचि दिखायी है। भारत अपनी तेल की 80 प्रतिशत से ज्यादा जरूरत आयात से पूरी करता है।

चीन में कोरोना वायरस प्रभावित मृतकों की संख्या 2 हजार पार

एजेंसी

चीन में कोरोना वायरस ने आतंक मचा रखा है। कोरोना वायरस से मरने वालों की संख्या में लगातार इजाफा हो रहा है। चीन के हुबेई प्रांत में कोरोना वायरस से पिछले 24 घंटों में 136 लोग मारे गए और इससे मरने वालों का आंकड़ा बढ़कर 2000 पार हो गया है। सरकार के मुताबिक, चीन में कोरोना वायरस से मरने वालों की संख्या 2004 हो गई है। इसके कुल 74,185 मामलों की पुष्टि हो चुकी है। राष्ट्रीय स्वास्थ्य आयोग (एनएचसी) ने बताया कि इससे मरने वालों की संख्या 2,004 हो गई है। वहीं इसके 1,749 नए मामले सामने आए हैं।

आयोग ने कहा कि जिन 136 लोगों की जान गई उनमें से 132 हुबेई में जबकि हेइलोंगजियांग, शानदोंग, गुआंगदोंग और गुइझोऊ में एक-एक व्यक्ति मारे गए। आयोग ने बताया कि इसके 1,185 नए संदिग्ध मामले सामने आए हैं। मंगलवार को 236 मरीजों की हालत काफी गंभीर थी जबकि 1,824 लोगों को अस्पताल से छुट्टी दे दी गई।

सरकारी समाचार एजेंसी शिन्हुआ की खबर के अनुसार आयोग ने बताया कि 11,977 मरीजों की हालत गंभीर बनी है और 5,248 लोगों के इससे पीड़ित होने की आशंका है। एनएचसी ने कहा कि अभी तक कुल 14,376 संक्रमित लोगों को इलाज के बाद अस्पताल से छुट्टी दी जा चुकी है। वहीं चीन में वुहान स्थित वुचांग अस्पताल के निदेशक डॉक्टर लिउ झिमिंग की कोरोना वायरस से मंगलवार को मौत हो गई थी।

एनएचसी ने गत शुक्रवार को कहा था कि कुल 1,716 चिकित्सा कर्मियों को कोरोना वायरस होने की पुष्टि हुई है। 11 फरवरी तक मरीजों के इलाज में लगे छह चिकित्सा कर्मियों की जान जा चुकी थी। इस बीच, हांगकांग में सोमवार तक इसके 62 मामलों की पुष्टि हो गई थी, जहां इससे एक व्यक्ति की जान जा चुकी है। वहीं मकाउ में 10 और ताइवान में इससे एक व्यक्ति की मौत हो गई। ताइवान में इसके 22 मामले अभी तक सामने आए हैं। गौरतलब है कि पिछले वर्ष दिसंबर में चीन के वुहान में कोरोना वायरस का पहला सामने आया था जिसके बाद यह 25 से ज्यादा देशों में फैल गया।

भारत में 70 फीसदी तक बढ़े जरूरी दवाइयों के दाम

नई दिल्ली। आईपीटी नेटवर्क

चीन में कोरोना वायरस (Corona Virus) आपदा के बाद अब दुनिया की दूसरी सबसे अधिक आबादी वाली देश में मोबाइल फोन से लेकर जरूरी दवाओं की कीमतों में भारी बढ़ोतरी देखने को मिल रही है। भारत में सबसे अधिक इस्तेमाल किए जाने वाले दवाओं में से एक पैराासिटामोल (Paracetamol) की कीमतों में 40 फीसदी से अधिक का इजाफा हो चुका है। वहीं, बैक्टिरियल इन्फेक्शन (Bacterial Infection) से बचने के लिए इस्तेमाल होने वाली दवा एजिथ्रोमाइसिन (Azithromycin) भी 70 फीसदी तक महंगा हो चुका है। फार्मा कंपनी Zydus Cadila के चेयरमैन पंकज पटेल ने यह जानकारी दी है। पटेल ने कहा को कहा कि अगर अगले महीने की पहले सप्ताह तक दवाओं की सप्लाई दुरुस्त नहीं की गई तो इससे अप्रैल महीने में फार्मा इंडस्ट्री (Pharma Industry) दवाओं की भारी कमी से जूझ सकता है।

मैन्युफैक्चरिंग सेक्टर को तगड़ा झटका

कोरोना वायरस आपदा में अब तक 1 हजार से अधिक लोगों की जान जा चुकी है। अब दुनियाभर की अर्थव्यवस्थाओं को इसका खतरा सता रहा है। वैश्विक अर्थव्यवस्था के साथ-साथ भारत के लिए भी यह चिंताजनक स्थिति है, जो कि पहले से आर्थिक सुस्ती (Economic Slowdown) के दौर से गुजर रहा है। चीन में लोगों की आवाजाही पर प्रतिबंध लगा दिया गया है, जिसके बाद से उत्पादन सेक्टर (Manufacturing Sector) को तगड़ा झटका लगा है। भारत कच्चे माल से लेकर कई इंटरमीडिएट उत्पादों के लिए चीन पर निर्भर रहता है. ऐसे में चीन की ये आपदा, भविष्य में भारत की मुश्किलें बढ़ा सकता है।

दुनियाभर में जेनेरिक दवाएं निर्यात करता है भारत

दवाएं बनाने के लिए इस्तेमाल होने वाली कई प्रमुख वस्तुओं की कीमतों में भारी इजाफा हुआ है। संभावना है कि इसके लिए इस्तेमाल होने वाले कई बेसिक चीजें छोटी और मध्यम अवधि में कम पड़ सकती हैं। दुनियाभर में सबसे अधिक जेनेरिक दवाएं भारत से ही निर्यात की जाती हैं। अमेरिकी बाजार तक में इस्तेमाल होने वाली कुल दवाओं का 12 फीसदी उत्पादन भारत में ही किया जाता है। इन दवाओं को बनाने के लिए API की जरूरतों को पूरा करने के लिए चीन पर निर्भर रहता है। लेकिन, दिलचस्प बात है कि कारोना वायरस से केवल दवाएं ही नहीं, बल्कि अन्य उत्पादों पर भी असर पड़ा है।

मोबाइल फोन उत्पादन पर असर

भारत की कई मोबाइल निर्माता कंपनियों को भी उत्पादन में अब परेशानियां हो रही हैं। इस मामले से जुड़े जानकारों का कहना है कि अगर चीजें जल्द ही बेहतर नहीं होती हैं तो भविष्य परेशानियां हो सकती हैं। इनका कहना है कि मौजूदा इन्वेन्टरी अगले दो सप्ताह तक के लिए ही हैं। इसके बाद उत्पादन को नुकसान हो सकता है। मोबाइल मैन्युफैक्चर करने के लिए इस्तेमाल होने वाले प्रिंटेड सर्किट बोर्ड, कैमरा मॉड्यूल्स, सेमी कंडक्टर्स, रजिस्टर्स समेत कई जरूरी उत्पादों की कमी हो सकती है। वित्त वर्ष 2017-18 में भारत 555 अरब डॉलर कीमत की इलेक्ट्रॉनिक्स उत्पादों का आयात किया था। एक सरकारी आंकड़े के मुताबिक, मार्च 2018 तक भारत में सेल्युलर मोबाइल हैंडसेट के उत्पादन संख्या बढ़कर सालाना 22.5 करोड़ तक पहुंच गई थी, जोकि साल 2015 तक 6 करोड़ यूनिट्स ही था।

अप्रैल से बदल जाएंगे विदेश में घूमने के नियम, अब सरकार आपसे वसूलेगी ये टैक्स

नई दिल्ली। एजेंसी

अब बहुत जल्द आपकी विदेश यात्रा महंगी होने वाली है। आगामी 1 अप्रैल 2020 के बाद विदेशी टूर पैकेज खरीदना और विदेशों में कोई भी फंड खर्च करना महंगा हो जाएगा। अगर कोई विदेशी टूर पैकेज खरीदता है या विदेशी करेंसी एक्सचेंज कराता है तो 7 लाख रुपये से अधिक की रकम पर टैक्स कलेक्शन एट सोर्स (ऊण्ए) देना होगा। दरअसल, केंद्र सरकार ने आम बजट 2020 में सेक्शन 206ण में संशोधन कर विदेशी टूर पैकेज और फंड पर ऊण्ए लगाने का प्रस्ताव दिया है।

अगर कोई विदेश में ट्रैवल, शिक्षा व अन्य तरह का कोई खर्च करता है या किसी को गिफ्ट भेजता है या फिर निवेश करता है तो इस तरह का ट्रांजैक्शन आरबीआई के लिबरलाइज्ड रेमिटेंस स्कीम (LRS) के तहत रेग्युलेट होगा। इसके तहत उच्चतम सीमा एक वित्त वर्ष में 2.5 लाख डॉलर तय की गई है। 70 रुपये के एक्सचेंज रेट के हिसाब से यह रकम करीब 1.75 करोड़ रुपये होती है।

क्या है नया नियम

इनकम टैक्स एक्ट, 1961 के सेक्शन 206ण के तहत अगर कोई अधिकृत डीलर एक वित्तीय वर्ष में 7 लाख रुपये से अधिक रकम को एलआरएस के जरिए विदेश भेजता है तो उन्हें 5 फीसदी की दर से ऊण्ए देना होगा। इस नियम में आगे कहा गया है कि विदेशी टूर पैकेज बेचने वाले सेलर पर ऊण्ए देने की जिम्मेदारी होगा। अगर पैन या आधार नहीं मुहैया कराया जाता है तो इसके लिए 5 फीसदी की जगह 10 फीसदी की दर से TCS देना होगा। विदेश में पढ़ाई हो जाएगी महंगी इन विदेशी टूर पैकेज में भारत के बाहर किसी एक देश या कई देशों का टूर पैकेज शामिल है। इनमें ट्रैवल का खर्च, होटल में ठहरने का खर्च, बोर्डिंग, लॉजिंग समेत अन्य तरह के सभी खर्च शामिल होंगे। सरकार के इस प्रस्ताव के बाद अब विदेश में पढ़ाई के लिए जाने से लेकर छुट्टियां मनाना तक महंगा हो जाएगा। हालांकि, जब जानकारों से पूछा गया कि क्या बैंक या मनी चेंजर्स के जरिए विदेशी करेंसी एक्सचेंज कराने पर भी 5 फीसदी की दर से TCS देना होगा? जानकारों का कहना है कि कोई भी अधिकृत व्यक्ति जो ग्राहकों से इस तरह का पेमेंट लेता है तो इसके लिए उन्हें 5 फीसदी की दर से TCS काटना होगा।

मिल सकता है रिफंड

फाइनेंशियल एक्सप्रेस ने अपनी एक रिपोर्ट में विशेषज्ञ के हवाले से लिखा है कि वास्तविक तौर पर विदेशी दौरा महंगा नहीं होगा. दरअसल, इनकम टैक्स दाखिल कर इस पर रिफंड क्लेम किया जा सकता है। विशेषज्ञ ने बताया है कि ग्राहक द्वारा भुगतान किए गए TCS को इनकम टैक्स रिटर्न दाखिल कर रिफंड के लिए क्लेम किया जा सकता है। हालांकि, इस रिफंड केवल उन्हीं लोगों को मिलेगा, जो ITR दाखिल करते हैं।

कमजोर मांग के कारण रिफाइंड सोया तेल वायदा कीमतों में गिरावट

नयी दिल्ली। आईपीटी नेटवर्क

हाजिर बाजार की कमजोर मांग के बीच सटोरियों ने अपने सौदों के आकार को घटाया जिससे वायदा कारोबार में बुधवार को रिफाइंड सोया की कीमत 1.4 रुपये की गिरावट के साथ 822.8 रुपये प्रति 10 किलोग्राम रह गयी। एनसीडीईएक्स में, रिफाइंड सोया के फरवरी माह में डिलीवरी वाले अनुबंध का भाव 1.4 रुपये या 0.17 प्रतिशत की गिरावट के साथ 822.8 रुपये प्रति 10 किलोग्राम रह गया जिसमें 7,540 लॉट के लिए कारोबार हुआ। इसी प्रकार, रिफाइंड सोया के मार्च माह में डिलीवरी वाले अनुबंध का भाव एक रुपये या 0.12 प्रतिशत की गिरावट के साथ 811.8 रुपये प्रति 10 किलोग्राम रह गया जिसमें 51,120 लॉट के लिए कारोबार हुआ। बाजार विश्लेषकों ने कहा कि पर्याप्त स्टॉक के मुकाबले कारोबारियों द्वारा अपने सौदों का आकार कम करने की वजह से वायदा कारोबार में मुख्यतः रिफाइंड सोया वायदा कीमतों में गिरावट आई।

भारत में दुनिया की पहली हाइपरलूप ट्रेन चलाने की तैयारी

नई दिल्ली। एजेंसी

अगर सबकुछ ठीक रहा तो भारत में विश्व की पहली हाइपरलूप ट्रेन दौड़ सकती है। हाइपरलूप ट्रेन एक ट्यूब से होकर गुजरती है और इसकी स्पीड 1200 किलोमीटर प्रति घंटे तक पहुंच जाती है। हाइपरलूप को लेकर वर्जिन ग्रुप ने अपना प्रस्ताव सड़क परिवहन मंत्री नितिन गडकरी के सामने रखा है। ग्रुप चाहता है कि वह दिल्ली और मुंबई के बीच इस ट्रेन को चलाए।

गडकरी से मिले कंपनी के प्रतिनिधि

इस प्रॉजेक्ट को लेकर महाराष्ट्र सरकार से पहले भी बातचीत हो रही थी, लेकिन शिवसेना की सरकार बनने के बाद प्रॉजेक्ट को रोक दिया गया, जिसके बाद ग्रुप के प्रतिनिधि नितिन गडकरी से बातचीत को आगे बढ़ाने की कोशिश में लगे हैं। कंपनी के प्रतिनिधि दिल्ली से मुंबई के बीच 1300 किलोमीटर लंबी दूरी पर इस ट्रेन को चलाने के लिए नितिन गडकरी से मुलाकात की है। ग्रुप के कुछ प्रतिनिधि फिलहाल भारत आए हैं और प्रॉजेक्ट से जुड़े तमाम स्टेक होल्डर्स से बातचीत कर रहे हैं।

पहले मुंबई-पुणे के बीच हाइपरलूप चलाने की थी प्लानिंग

पिछले सप्ताह नितिन गडकरी ने कहा था कि उन्होंने बुलेट ट्रेन की तरह दूरे प्रॉजेक्ट को लेकर कुछ इन्वेस्टर्स से मुलाकात की है। वर्जिन ग्रुप पहले मुंबई और पुणे की बीच ट्रेन चलाने को लेकर अपना प्रस्ताव दिया था, जिसे तत्कालीन बीजेपी सरकार से मंजूरी भी मिल चुकी थी। प्रॉजेक्ट के पहले फेज में 11.8 किलोमीटर लंबा ट्रैक बनता, जिसकी लागत 10 अरब डॉलर थी। इसे बनने में 2.5 साल का वक्त लगता।

विंटेज कारों पर पंजीकरण की प्रस्तावित व्यवस्था में शुल्क युक्ति संगत बनाने की जरूरत

नयी दिल्ली। एजेंसी

विंटेज कारों के पंजीकरण की प्रस्तावित व्यवस्था का स्वागत करते हुए विंटेज कार मालिकों के एक संगठन ने इसे विरासतों को बचाने की दिशा में एक अच्छा कदम बताया। लेकिन उसकी राय है कि बीते जमाने के प्रतिष्ठित वाहनों (विंटेज कारों) का पंजीकरण शुल्क युक्ति संगत होना चाहिए। विंटेज कार मालिकों के संगठन '21 गन सैल्यूट हेरिटेज एंड कल्चरल ट्रस्ट' के चेयरमैन और प्रबंध न्यासी मदन मोहन ने कहा, ''देश में दिल्ली को छोड़कर अन्य राज्यों में विंटेज कारों के पंजीकरण की सुविधा है। केंद्र सरकार ने हाल में ऐसी कारों का पंजीकरण करने की अलग व्यवस्था का एक मसौदा जारी किया है। इसका स्वागत किया जाना चाहिए। लेकिन इस मसौदे में विंटेज कारों के प्रस्तावित पंजीकरण शुल्क को युक्तिसंगत बनाने की जरूरत है।'' यह न्यास विंटेज कारों की एक अंतरराष्ट्रीय रैली '21 गन सैल्यूट अंतरराष्ट्रीय विंटेज कार रैली' का आयोजन करता है। शनिवार को इस रैली के नौवें संस्करण को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया गया।

गौरतलब है कि सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय ने 50 साल से अधिक पुराने 'क्लासिक' वाहनों के पंजीकरण के लिए अलग व्यवस्था का मसौदा जारी किया है। विंटेज मोटर वाहन आदेश- 2019 के मसौदे के अनुसार ऐसे वाहनों की पंजीकरण प्लेट उच्च सुरक्षा वाली होगी। नंबर प्लेट पर 'एक्सएक्सवीएवाईवाई' लिखा होगा। इसमें 'वीए' का मतलब विंटेज होगा, जबकि 'एक्सएक्स' राज्य का, 'वाईवाई' दो शब्दों की श्रृंखला का सूचक होगा। उसके बाद 01 से 09 तक नंबर होंगे। ऐसे वाहनों को प्रस्तावित वाहन कबाड़ नीति से छूट होगी। नीति में ऐसे वाहनों के लिए 20,000 रुपये का एकबारगी पंजीकरण शुल्क रखा गया है जो 10 साल के लिए मान्य होगा। मोहन ने कहा, ''सरकार को 20,000 रुपये के पंजीकरण शुल्क को युक्तिसंगत बनाना चाहिए। इनके रखरखाव पर मालिकों का बहुत पैसा खर्च होता है। यह हमारे देश की विरासत हैं, इनका संरक्षण किया जाना चाहिए। दुनियाभर में इन कारों का बहुत सम्मान किया जाता है।''

उन्होंने बताया कि महाराष्ट्र जैसे राज्य में इन वाहनों के आजीवन पंजीकरण के लिए मामूली (500 रुपये) एकबारगी शुल्क लगता है। इसलिए सरकार को प्रस्तावित व्यवस्था में इनके पंजीकरण के लिए युक्तिसंगत शुल्क लगाना चाहिए। नौंवी 21 गन सैल्यूट अंतरराष्ट्रीय विंटेज कार रैली दिल्ली से शुरू होकर गुड़गांव, आगरा, सवाई माधोपुर, जयपुर, गजनेर, जैसलमेर, खिमसर, जोधपुर, माउंट आबू, कच्छ का रण, मांडवी, राजकोट, गिर, भावनगर, वडोदरा, डूंगरपुर और अन्य विरासत स्थलों से होते हुए यह रैली 10 मार्च को होली के दिन उदयपुर में समाप्त होगी। इस रैली का आयोजन पर्यटन मंत्रालय के सहयोग से किया जा रहा है। रेमंड समूह के चेयरमैन और प्रबंध निदेशक गौतम सिंघानिया की पांच विंटेज कारें इस रैली में शामिल हुई हैं। इसमें 1903 की कैडिलैक और 1936 की रॉल्स रॉयस शामिल हैं। उनकी 1903 की कैडिलैक रैली में शामिल होने वाली सबसे पुरानी कार है।

डी.पी.ज्वेलर्स के इंदौर स्थित शोरूम पर किया गया फॉरएवरमार्क का भव्य लॉन्च

खूबसूरत अभिनेत्री नेहा शर्मा मुख्य अतिथि के रूप में मौजूद रहीं

इंदौर। शुद्धता और पारदर्शिता के लिए 80 वर्षों से प्रसिद्ध, डीपी ज्वेलर्स ने डी-बियर्स ग्रुप के डायमंड ब्रांड, फॉरएवरमार्क के साथ पार्टनरशिप की शुरुआत की, और इंदौर में अपने ज्वेलरी शोरूम पर फॉरएवरमार्क ब्रांड को लॉन्च किया। फॉरएवरमार्क डायमंड दुनिया के सबसे सावधानी से चुने गए डायमंड हैं, वहीं डीपी ज्वेलर्स अपनी अद्भुत कारीगरी से निर्मित ज्वेलरी के लिए जाने जाते हैं। इन दोनों ब्रांड्स का मिलकर काम करना ग्राहकों को आश्वस्त करता है कि उन्हें डायमंड ज्वेलरी के सबसे सुंदर और दुर्लभ कलेक्शंस देखने को मिलेंगे। लॉन्च के बाद, डीपी ज्वेलर्स ने 20 फरवरी से 1 मार्च, 2020 तक फॉरएवरमार्क ज्वेलरी के 300 से अधिक प्रीमियम डायमंड शोकेस का आयोजन किया है। इस विशेष ज्वेलरी का अनुभव करने के लिए डीपी ज्वेलर्स शोरूम में आपका स्वागत है। इस मौके पर मौजूद, बॉलीवुड अभिनेत्री नेहा शर्मा ने कहा कि 'इंदौर में डीपी ज्वेलर्स में फॉरएवरमार्क के

लॉन्च के मौके पर मैं फॉरएवरमार्क और डीपी ज्वेलर्स द्वारा तैयार की गई शानदार डायमंड ज्वेलरी को पहनकर रॉयल फील कर रही हूं। दुनिया के 1% से भी कम डायमंड फॉरएवरमार्क डायमंड बनने के योग्य हैं। मुझे यकीन है कि इंदौर के लोग वास्तव में फॉरएवरमार्क और डीपी ज्वेलर्स के उत्कृष्ट कौशल और डिजाइन के साथ मिलकर बने इस विशाल कलेक्शन की सराहना करेंगे।

पार्टनरशिप के बारे में बताते हुए, डी.पी.आभूषण लिमिटेड के प्रबंध निदेशक, विकास कटारिया जी ने कहा कि 'फॉरएवरमार्क से जुड़कर हमें खुशी महसूस हो रही है। फॉरएवरमार्क दुनिया में डायमंड के 130 वर्षों से सबसे बड़े ब्रांड डी-बीयर्स ग्रुप का हिस्सा है एवं डायमंड ज्वेलरी का अग्रणी ब्रांड हैं। फॉरएवरमार्क अपने उपभोक्ताओं को दुनिया के बेहतरीन और शानदार ढंग से तैयार किए गए प्रीमियम क्वॉलिटी वाले सर्टिफायड डायमंड्स प्रदान करता है। यह डायमंड्स बहुत ही दुर्लभ तरह के डायमंड है क्योंकि दुनिया भर के डायमंड्स में से सिर्फ एक प्रतिशत डायमंड्स ही फॉरएवरमार्क का हिस्सा बनते हैं। उन्होंने यह भी कहा की फॉरएवरमार्क कस्टमर्स को परफेक्शन के साथ तराशे गए अद्भुत डायमंड्स उपलब्ध कराता हैं, जो एथिकल सोर्सिंग, क्वॉलिटी सर्टिफिकेशन, इन्वेस्टमेंट वैल्यू और मूल्य-निर्धारण में पारदर्शिता रखते हुए संजोए गए है। हमारे डिजाइनों में फॉरएवरमार्क डायमंड का उपयोग न केवल ज्वेलरी की गुणवत्ता को बल्कि ग्राहकों के भरोसे को भी बढ़ाता है।' इस अवसर पर, फॉरएवरमार्क इंडिया के प्रेसिडेंट श्री सचिन जैन ने कहा कि 'लगभग 80 वर्षों की विरासत के साथ, डीपी ज्वेलर्स इंदौर के बेहतरीन ज्वेलर्स में से एक है। फॉरएवरमार्क अपने पार्टनर का चयन ध्यानपूर्वक करता है और विशेष रूप से उन विशेषज्ञों के साथ काम करता है जो डायमंड को लेकर संवेदनशील होते हैं। डीपी ज्वैलर्स के साथ साझेदारी करना हमारे लिए महत्वपूर्ण उपलब्धि है। उनके शानदार डिजाइन और कारीगरी फॉरएवरमार्क डायमंड की सुंदरता को बढ़ाते हैं, हमें उनके साथ काम करने पर गर्व है।

रोजाना की ट्रांजैक्शन्स होंगी आसान, वीजा का OTP की झंझट खत्म करने का विचार

मुंबई। एजेंसी

एटीएम कार्ड और क्रेडिट कार्ड का इस्तेमाल करते समय ओटीपी आपको झंझट लगती है, तो आपके लिए अच्छी खबर है। रोजाना पेमेंट के मामले में ओटीपी यानी वन टाइम पासवर्ड की झंझट से अब मुक्ति मिल सकती है। ग्लोबल नेटवर्ड प्रवाइडर 'वीजा' टू फैक्टर ऑथेंटिफिकेशन (2FA) हटाने की तैयारी कर रही है। यानी आपके लिए आसानी, रोजाना के ट्रांजैक्शन्स के लिए आपको ओटीपी की जरूरत नहीं पड़ेगी। वीजा ओटीपी की जगह रिस्क पर आधारित प्रॉम्प्ट प्रॉसेस अपनाने पर विचार कर रही है। यानी जहां किसी तरह की संदिग्धता नजर आएगी, वहां ओटीपी प्रॉसेस का इस्तेमाल किया जाएगा। इस प्रॉसेस के लिए वीजा डोमेस्टिक रेगुलेटर्स और बैंकिंग पार्टनर्स के साथ चर्चा करेगी। चर्चा के बाद यह तय किया जाएगा कि 2FA नियमों में किस तरह से धीरे-धीरे ढील दी जा सकती है। कंपनी चाहती है कि इंटरनैशनल नियमों को ध्यान में रखते हुए ट्रांजैक्शन से जुड़े बदलाव किए जाएं। यह जानकारी कंपनी के एक शीर्ष अधिकारी ने दी है।

ग्राहकों को बढ़िया अनुभव देने की कोशिश!

कंपनी ने एशिया-पसिफिक मार्केट्स के लिए अपने सिक्योरिटी रोडमैप के तहत इस बारे में चर्चा की। वीजा के एशिया-पसिफिक के हेड ऑफ रिस्क, जो कनिंघम ने कहा, 'हमारा मानना है कि 2FA जरूरी है लेकिन हमें लगता है कि इसका इस्तेमाल जोखिम आधारित होना चाहिए।' उन्होंने आगे कहा, हमारी इंडस्ट्री की असल ग्रोथ ई-कॉमर्स स्पेस से हो रही है, ऐसे में ग्राहकों को बढ़िया अनुभव देने के लिए हमें कुछ बदलाव करने की जरूरत है।

2FA क्या है?

ई-कॉमर्स प्लैटफॉर्म्स पर डेबिट या क्रेडिट कार्ड से ट्रांजैक्शन में सुरक्षा की दो परतें होती हैं। इसे टू-फैक्टर ऑथेंटिकेशन कहते हैं। पहली लेयर में ग्राहक से कार्ड का डीटेल और सीवीवी आदि लेकर ट्रांजैक्शन को मंजूरी दी जाती है और दूसरी लेयर में ओटीपी देने के लिए कहा जाता है, जो कस्टमर के मोबाइल नंबर पर भेजा जाता है। वीजा कंपनी का मानना है कि सभी ट्रांजैक्शन्स में इसकी जरूरत नहीं है।

क्या है ऑप्शन?

कंपनी ओटीपी की जगह ट्रांजैक्शन रिस्क बेस्ड मॉनिटरिंग की बात कर रही है। यह काम एक खास तरह की प्रक्रिया 'ईएमवी 3डी सिक्योर' के जरिए किया जाएगा। सिंगापुर और ऑस्ट्रेलिया समेत कई देशों ने हाल में यह प्रॉसेस अपनाया है।

भारत में इंटरनेट इस्तेमाल करने वालों की संख्या 2023 तक हो जाएगी 90 करोड़

नयी दिल्ली। एजेंसी

प्रौद्योगिकी कंपनी सिस्को ने मंगलवार को कहा कि 2023 तक इंटरनेट का इस्तेमाल करने वालों की संख्या बढ़ कर 90.7 करोड़ तक पहुंच जाएगी।वर्ष 2018 में देश में 39.8 करोड़ लोग इंटरनेट का उपयोग कर रहे थे। सिस्को की एक रपट में कहा गया है कि 2023 तक देश में इंटरनेट से जुड़े उपकरण 2.1 अरब तक पहुंच जाएंगे। इसमें से एक चौथाई मशीन से मशीन (एम2एम) माड्यूल वाले यंत्र होंगे। रपट के अनुसार उस समय तक देश में मोबाइल उपयोगकर्ताओं की संख्या 96.6 करोड़ हो जाएगी जो कुल आबादी का 68 प्रतिशत है। 2018 में यह संख्या 76.3 करोड़ (56 प्रतिशत) थी। उस समय तक हर 20 में से एक कनेक्शन 5जी वाला होगा। रपट में कहा गया है कि भारत में इंटरनेट से जुड़े उपकरणों और कनेक्शन की वृद्धि (7 प्रतिशत वार्षिक) की दर से हो रही है जो आबादी में वृद्धि दर से अधिक है।

शिव का कोई ईश नहीं, शिव हैं सबके ईश

शिव में संपूर्ण सृष्टि निहित है, और वे सृष्टि समन्वय का अनुपम उदाहरण हैं। वे कपूर की भांति गौर वर्ण के हैं, तो उन्हें कृष्ण वर्ण भी कहा गया है। एक ओर वे रौद्र रूप वाले हैं, तो दूसरी ओर भोलेनाथ भी हैं, इसीलिए उन्हें देवों का देव कहा जाता है

इलस्ट्रेशन: सुदर्शन मल्लिक

शिवरात्रि (21 फरवरी) पर विशेष

श्री श्री आनन्दमूर्ति

शिव हर समय आध्यात्मिक सुधारस में मग्न रहते थे। इसलिए बहुत से लोग सोचते थे कि चांद में जिस सोलहवीं कला को हम 'अमाकला' कहकर पुकारते हैं और देख नहीं पाते, वह शिव के मस्तक पर है। इस सुधारस ने ही शिव को भोलेनाथ बना दिया है। शिव क्या केवल शुभ्र त्वचा वाले ही हैं? या सुधारस के प्रकाश में उनका सारा शरीर ज्योतिर्मय है? विविध मणि-माणिक्यों की ज्योति से जैसी झलक निकलती है, शिव की शुभ्र देह से उसी प्रकार की चमक झलकती है। इसी कारण कहा गया है- शिव का माधुर्य से परिपूर्ण, सुगन्धमय कोमल शरीर इस वर्ण की उज्ज्वलता से और भी अधिक मनोरम व मनोहर बन गया है।

अत्याचारियों के अहंकार का दमन करने के लिए उनके हाथ में है परशु। शिव ने मनुष्य जगत, पशु जगत, पादप जगत- सबका ही संतान के समान लालन-पालन किया और प्राणपण से प्यार किया। इस कारण शिव के पास मृगों का दल निर्भय होकर जाता था। इस कारण शिव के पास आकर कोई भी पशु आश्रय पाता था। पीड़ित मनुष्य, पीड़ित पशु जब भय से त्रस्त होकर शिव के पास आते, तब शिव उन्हें अभय देते थे। उनके कल्याण के लिए उन्हें वरदान दिया करते थे। भोले-भाले शिव दुष्टों की आंखों में भी आंसू देखकर स्थिर नहीं रह सकते थे। वे उन्हें भी वरदान देकर उनके लिए संशोधन का मार्ग प्रस्तुत करते थे। हर स्थिति में ही उनमें मानसिक साम्य बना रहता था। घोर विपत्ति के समय भी उनके चेहरे की हंसी नहीं कम होती थी। रुदन में टूट जाने वाली स्थिति में भी वे हंसते ही रहते थे। विश्व के इतिहास में इस प्रकार का सदा प्रसन्न चेहरा विरला ही मिल पाएगा। कहा जाता है, जो अमर हैं, वे भी देवों के देव महादेव की स्तुति करते हैं और उनके चरणों में सिर झुकाते हैं।

नियम है- जिसमें सामर्थ्य है, वह यदि अपने से दूसरों में अधिक सामर्थ्य देखता है, तो वह उसकी स्तुति करता है। इस कारण जगत के समस्त देव शिव की स्तुति करते हैं- हे प्रभु शिव! तुम सबके ईश, महेश हो। किंतु तुम स्वयं अनीश हो अर्थात तुम्हारे कोई ईश नहीं हैं। हे शिव! गुणों का विचार करते समय, गुणों की गंभीरता मापते समय हम तुम्हारी थाह नहीं पा सकते, क्योंकि तुम अशेषगुण हो। हे शिव, अपनी उज्ज्वलता बढ़ाने के लिए, अपने को अधिक से अधिकतर प्रकाशमय बनाने के लिए विभिन्न देवताओं के कानों में, कण्ठ में, बाहुओं में, कटि में अजस्र प्रकार के अलंकार व मणिहार हैं, किन्तु तुम्हारे पास कुछ भी नहीं है। तुम्हारे प्रिय भक्तगण, तुम्हारे अति प्रियगण... प्राणों से प्रिय तुम्हारी संतान... ये ही तुम्हारे अलंकार हैं। ये ही तुम्हारे मणिहार हैं, इनसे ही तुम्हारा गौरव है। इनके बारे में सोचकर ही तुमने अपने दिन बिता दिये। हे शिव! तुम्हारे गुणों का वर्णन करना मनुष्य की सामर्थ्य के बाहर है।

> हे शिव, अपनी उज्ज्वलता बढ़ाने के लिए विभिन्न देवताओं के कानों में, कण्ठ में, बाहुओं में, कटि में अजस्र प्रकार के अलंकार व मणिहार हैं, किन्तु तुम्हारे पास कुछ भी नहीं है। तुम्हारे प्रिय भक्तगण, तुम्हारे अति प्रियगण... तुम्हारे प्राणों की प्रिय संतान... ये ही तुम्हारे अलंकार हैं।

- हे आदिपिता, आदिदेव, मंत्रेश, महादेव! तुम्हारे गुणों का वर्णन संभव नहीं। यदि विराट हिमालय के समान बहुत बड़ी दवात लेकर उसमें समुद्र की जलराशि जितनी मसी (स्याही) डाल दें और स्वर्ग के पारिजात वृक्ष की शाखा की लेखनी (कलम) के रूप में प्रयोग की जाए और इन सब को लेकर स्वयं विद्या की अधिष्ठात्री देवी अनंतकाल तक लिखती रहें, तब भी तुम्हारी गुणराशि को लिख कर समाप्त नहीं किया जा सकेगा।

सभी एक वाक्य में कहते हैं- तुम हमारे पिता हो, तुम हमारे आदिपिता हो, तुम हमारे तारक ब्रह्म हो, तुम ही हमारे सब कुछ हो। तुम्हारे चरणों में हम बारम्बार प्रणाम करते हैं। पृथ्वी की छोटी-बड़ी समस्त चीजों व विभिन्न मर्यादाओं के नियंत्रक हैं शिव। जिनका पौरुष से दीप्त मन, जिनकी प्रज्ञा से समृद्ध मानसिकता, जिनका ममतासिक्त हृदय है, केवल वे ही इन समस्त छोटे-बड़े व मध्यम नियंत्रकों के नियंत्रक हो सकते हैं। 'तुम ईश्वरों के अर्थात नियंत्रकों के महेश्वर हो, तुम देवताओं के महादेव हो। तुम अधिपतियों के महाधिपति हो। तुम श्रेष्ठों में श्रेष्ठतम हो। तुम समस्त विश्व में पूजनीय हो। इस कारण हे शिव, तुम्हें मैं जानूं या न जानूं, तुम सबके ईश हो, तुम महेश हो।'

प्रस्तुतिः आचार्य दिव्यचेतनानन्द

बहु-आयामी शिव तत्त्व

विरोधाभासों का समन्वय हैं शिव

डॉ. निखिलेश शास्त्री

'शिव' शब्द का अर्थ कल्याणकारी है, क्योंकि वे लोक-कल्याण के लिए सदा तत्पर रहते हैं। इसी आस्था से देवता, राक्षस, महर्षि, यक्ष-गंधर्व ही नहीं, बल्कि शिव भगवान श्रीराम और श्रीकृष्ण के भी आराध्य देवता हैं। शंकर, इस विशेषण से भी शिव पूजनीय हैं, क्योंकि 'शं' का अर्थ आनंद तथा 'कर' का तात्पर्य करने वाला है। इसलिए आनंद प्रदान करने वाला शिव का दिव्य व्यक्तित्व 'शंकर' हैं।

ईश्वर के जो सत्-चित्-आनंद, तीन रूप हैं, उनमें आनंद रूप भगवान शिव का है, सत् उनका मातृ-स्वरूप है और चित् पितृ-स्वरूप है। अतः शिव में मातृभाव-पितृभाव इन दो विरोधाभासों का विलक्षण समावेश है। इन दो रूपों में शिव-शक्ति के रूप में एकाकार होकर अर्द्धनारीश्वर के रूप में दिखाई देते हैं।

शिव के व्यक्तित्व में ऐसे कई विरोधाभास हैं। एक ओर वे संन्यासी, औघड़ या श्मशानवासी हैं, तो साथ ही आदर्श गृहस्थ और प्रेमी भी हैं। वे दाम्पत्य जीवन के उत्कृष्ट उदाहरण हैं। पार्वती जी के जूड़े में सजे आभूषणों को देख कर शिव आनंदित होते हैं। इस प्रकार शिव का व्यक्तित्व बहु-आयामी और अनेक विलक्षणताओं का पुंज है। पुराणों में जहां उन्हें अति सौम्य रूप में चित्रित किया गया है, वहीं वेदों में उन्हें रौद्र रूप में दर्शाया गया है। उनके कंठ में घातक हलाहल है, तो जटा में अमृत की वर्षा करने वाला चंद्रमा सुशोभित है। उनके एक हाथ में लोक मनोरंजन हेतु नृत्य करने के लिए डमरू है, तो दूसरे हाथ में दुष्टों का दलन करने के लिए त्रिशूल है। शिव के व्यक्तित्व में इतनी विरोधी विशेषताएं होने पर भी उनमें सुदृढ़ संतुलन की कुशलता है।

शिव मृत्युंजय भी हैं, अर्थात् वे प्राणियों की शारीरिक व्याधियों का नाश कर उन्हें दीर्घायु, आरोग्य, धन-सम्पदा देते हुए अंत में उस प्राणी को जन्म-मृत्यु के बंधन से मुक्त कर देते हैं। इसके लिए वेदों में महामृत्युंजय जाप का विशेष माहात्म्य है और 'नमः शिवाय',- इस पंचाक्षर मंत्र से भी शिव का जलधारा से अभिषेक किया जाता है।

देवी भागवत पुराण में उल्लेख है कि सती के वियोग में जब भगवान अति द्रवित हुए, तो उनके नेत्रों से अश्रु निकल पड़े और वे अश्रु जहां-जहां गिरे, वहां रुद्राक्ष वृक्ष की उत्पत्ति हुई। इसलिए रुद्राक्ष को धारण करना अति फलदायी माना जाता है। इसे धारण करने से आरोग्य और धन-प्राप्ति होती है। इस प्रकार पंचदेवों में प्रधान, अव्यक्त, अजन्मे, परब्रह्म परमेश्वर महादेव शिव की उपासना अत्यंत कल्याणकारी और सिद्धिदात्री है।

शिव महिमा

शिव सब देवों, मानवों के परमपिता

ब्रह्मा कुमार सुशांत

हमेशा मंगलकारी तथा सभी के कल्याणकारी सर्वेश्वर सदाशिव से शुभाशीष एवं वरदान प्राप्ति के लिए भक्तजन, खासतौर से शिवरात्रि के शुभ अवसर पर व्रत, उपवास, जागरण, शिव मंत्र उच्चारण आदि करते हैं, जिससे वे कुछ समय के लिए तन-मन की शांति, शुद्धता एवं संतुलन को प्राप्त करते हैं। केवल एक दिन या कुछ दिन के लिए नहीं, बल्कि सदा के लिए शिव की शक्ति और वरदानों से अपने जीवन को सुख-शांतिपूर्ण बनाने के लिए शिव, शिवत्व तथा शिव तत्व के बारे में जानकारी जरूरी है।

परमात्मा शिव सर्वोच्च सत्ता एवं शक्ति है, मनुष्य सृष्टि रूपी कल्प वृक्ष का बीज, दिव्य चेतन ज्योति बिन्दु स्वरूप ज्योतिर्लिंग है। जिनके दर्शन हेतु मानव के स्थूल नेत्र नहीं, अपितु आत्म ज्ञान दर्शन की दिव्य बुद्धि रूपी नेत्र चाहिए, जो परमात्मा शिव ही खोलते हैं या प्रदान करते हैं।

दिव्य ज्योति स्वरूप निराकार शिव सभी मनुष्य आत्माओं के परमपिता परमात्मा है। प्रकृति के पांच तत्व से बना शरीर या भौतिक जगत के जन्म-मृत्यु एवं परिवर्तन प्रक्रिया से परे परमात्मा शिव, अजोनि जन्मा, अजन्मा, अभोक्ता, प्रकृति पति, त्रिकाल दर्शी, त्रिलोकी नाथ, पारब्रह्म परमेश्वर, ब्रह्मलोक एवं परमधाम निवासी हैं। उनके ज्योति स्वरूप की याद में ही भारत के द्वादश ज्योतिर्लिंग पीठ प्रसिद्ध हैं।

इस निराकार ज्योति बिंदु स्वरूप स्थिति के कारण शिव सूक्ष्म शरीरधारी आकारी देवता शंकर जी से भी भिन्न

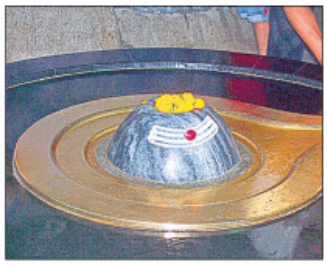

हैं। शिव शब्द का अर्थ कल्याणकारी है, तो शंकर शब्द विनाश का द्योतक है। परमात्मा को त्रिमूर्ति शिव इसलिए कहा जाता है कि वे ब्रह्मा जी के द्वारा नई दैवी सृष्टि की रचना, विष्णु जी के द्वारा सृष्टि की पालना एवं शंकर देवता के द्वारा सृष्टि का विनाश यानी सम्पूर्ण परिवर्तन कराते हैं।

तभी उनके शिव लिंग के ऊपर तीन रेखाएं अंकित करते समय शिव के पुजारी 'ब्रह्मा देवताय नमः', 'विष्णु देवताय नमः' एवं 'शंकर देवताय नमः' कह कर मंत्र उच्चारण करते हैं और उन तीन रेखाओं के ऊपर बिंदु की आकृति में चंदन का टीका लगाते हुए, 'शिव परमात्माय नमः' उच्चारण करते हैं। 'तैंतीस कोटि देवी देवताय नमः' तो कहा जाता है, परंतु 'शिव देवताय' नहीं, हमेशा 'शिव परमात्माय नमः' कहा जाता है। शिव ही सभी देव, मानव और धर्म आत्माओं के भी पिता, परमपिता परमात्मा हैं।

सरकार ने वर्ष 10 करोड़ 62.1 लाख टन गेहूं उत्पादन का अनुमान जताया

नयी दिल्ली। एजेंसी

ताजा सरकारी अनुमानों में कहा गया है कि अच्छी बरसात और ज्यादा बुआई के बीच देश में गेहूं की पैदावार 2019-20 में रिकॉर्ड 10 करोड़ 62.1 लाख टन तक पहुंचने की संभावना है। गेहूं का उत्पादन साल-दर-साल बढ़ रहा है और फसल वर्ष 2018-19 में 10 करोड़ 36 लाख टन गेहूं का कीर्तिमान बना था। गेहूं मुख्य रबी (सर्दियों) फसल है। इसकी कटाई अगले महीने शुरू होगी। कृषि मंत्रालय ने खाद्यान्न उत्पादन का दूसरा अनुमान जारी करते हुए कहा है कि देश में मॉनसून सत्र (जून-सितंबर 2019) में कुल मिला कर बरसात 10 प्रतिशत अधिक थी। अच्छी नमी के चलते फसल वर्ष 2019-20 में अधिकांश फसलों की पैदावार सामान्य से अधिक रहने की संभावना है। जमीन की नमी अच्छी रहने से इस वर्ष गेहूं खेती का रकबा बढ़ने की वजह से गेहूं का रिकॉर्ड उत्पादन होने

अनुमान लगाया गया है।

मंत्रालय के आंकड़ों के मुताबिक, इस फसल वर्ष के जनवरी-अंत तक तीन करोड़ 36.1 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में गेहूं की बुआई हुई थी। पिछले साल इसी दौरान गेहूं का यह रकबा दो करोड़ 99.3 लाख हेक्टेयर था। दूसरे अनुमान के अनुसार, फसल वर्ष 2019-20 में गेहूँ, चावल, मोटे अनाज और दलहन आदि सहित कुल खाद्यान्न उत्पादन रिकॉर्ड 29 करोड़ 19.5 लाख टन होने का अनुमान है, जो पिछले वर्ष 28 करोड़ 52.1 लाख टन से कहीं अधिक होगा। इस बार चालू वर्ष के रबी सत्र में 14 करोड़ 23.6 लाख टन और खरीफ सत्र में 14 करोड़ 96 लाख टन अनाज की पैदावार होने के अनुमान हैं। धान का उत्पादन पिछले साल के 11 करोड़ 64.8 लाख टन से मामूली वृद्धि के साथ इस साल 11 करोड़ 74.7 लाख टन होने का अनुमान है, जबकि विभिन्न अनाजों का उत्पादन 26 करोड़ 31.4 लाख टन से बढ़कर 26 करोड़ 89.3 लाख टन होने का अनुमान है। आंकड़ों के अनुसार, इस साल दलहन उत्पादन दो करोड़ 30.2 लाख होने का अनुमान है जो पिछले साल दो करोड़ 20.8 लाख टन था। वर्ष 2019-20 में तिलहन उत्पादन बढ़कर तीन करोड़ 41.8 लाख टन होने का अनुमान है जो पिछले साल तीन करोड़ 15.2 लाख टन था। नकदी फसलों के बीच, गन्ने का उत्पादन उक्त अवधि में पहले के 40 करोड़ 54.1 लाख टन से घटकर 35 करोड़ 38.4 लाख टन रह जाने का अनुमान है। वर्ष 2018-19 में कपास का उत्पादन पहले के दो करोड़ 80.4 लाख गांठ से बढ़कर चालू वर्ष में तीन करोड़ 48.9 लाख गांठ (170 किलो प्रत्येक) हो जाने का अनुमान है। जबकि जूट / मेस्टा उत्पादन पिछले साल के 98 लाख गांठ (एक गांठ- 180 किग्रा) के स्तर पर ही बने रहने की उम्मीद है। खाद्यान्न उत्पादन के अंतिम अनुमान से पहले मंत्रालय, चार अग्रिम अनुमान जारी करता है।

डीलरों के पास अब सिर्फ बीएस-6 मानक वाले वाहन ही भेजें विनिर्माता : फाडा

नयी दिल्ली। आईपीटी नेटवर्क

वाहन डीलरों के अखिल भारतीय संगठन फाडा ने वाहन विनिर्माता कंपनियों से शनिवार को कहा कि वे डीलरों तक अब केवल बीएस-6 उत्सर्जन मानक वाले वहन ही भेजें क्योंकि उच्चतम न्यायालय ने बीएस-4 मानक वाले वाहनों की बिक्री और पंजीकरण की समय सीमा एक अप्रैल से आगे बढ़ाने से मना कर दिया है। फेडरेशन ऑफ ऑटोमोबाइल्स डीलर्स एसोसिएशंस (फाडा) ने कहा कि वाहन बाजार में एक साल से भी अधिक समय से नरमी है। मांग की वर्तमान स्थिति के हिसाब से अब

डीलरों के लिए उनके पास बचे बीएस-4 उत्सर्जन मानक वाले वाहनों के स्टॉक को 31 मार्च 2020 तक पूरी तरह बेच पाना भी एक बड़ी चुनौती है। फाडा के अध्यक्ष आशीष काले ने एक बयान में कहा, "फाडा सभी वाहन विनिर्माताओं से अपील करती है कि वे डीलरों को अब पूरी तरह से बीएस-6 उत्सर्जन मानक वाले वाहन ही भेजे और डीलरों को तत्काल प्रभाव से बीएस-4 मानक वाहनों की बिलिंग बंद करें। फाडा ने अपने सदस्य डीलरों को भेजे एक पत्र में सलाह दी है कि वह 31 मार्च 2020 तक उनके पास बचे हुए बीएस-4 उत्सजर्न मानक वाहनों का परिसमापन करने की योजना बनाएं। उल्लेखनीय है कि देश में एक अप्रैल के बाद बीएस-4 उत्सर्जन मानक वाहनों की बिक्री पर पाबंदी होगी।

खुशखबरी

इस साल गेहूं और चावल का रिकॉर्ड उत्पादन होने का अनुमान, जारी हुए आंकड़े

नई दिल्ली। अच्छी बरसात और ज्यादा बुआई के बीच देश में इस सला गेहूं (India to harvest record rice, wheat crops) की पैदावार 2019-20 में रिकॉर्ड 10 करोड़ 62.1 लाख टन तक पहुंचने की संभावना है। सरकार की ओर से जारी आंकड़ों के मुताबिक, गेहूं का उत्पादन साल-दर-साल बढ़ रहा है और फसल वर्ष 2018-19 में 10 करोड़ 36 लाख टन गेहूं का कीर्तिमान बना था. गेहूं मुख्य रबी (सर्दियों) फसल है। इसकी कटाई अगले महीने शुरू होगी। कृषि मंत्रालय (Ministry of Agriculture) ने खाद्यान्न उत्पादन (wheat production of 106.21 million tonne in the 2019-20 crop year) का दूसरा अनुमान जारी करते हुए कहा है कि देश में मॉनसून सत्र (जून-सितंबर 2019) में कुल मिला कर बरसात 10 प्रतिशत अधिक थी।अच्छी नमी के चलते फसल वर्ष 2019-20 में अधिकांश फसलों की पैदावार सामान्य से अधिक रहने की संभावना है। जमीन की नमी अच्छी रहने से इस वर्ष गेहूं खेती का रकबा बढ़ने की वजह से गेहूं का रिकॉर्ड उत्पादन होने अनुमान लगाया गया है।

रिकॉर्ड गेहूं के उत्पादन की उम्मीद- मंत्रालय के आंकड़ों के मुताबिक, इस फसल वर्ष के जनवरी-अंत तक तीन करोड़ 36.1 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में गेहूं की बुआई हुई थी। पिछले साल इसी दौरान गेहूं का यह रकबा दो करोड़ 99.3 लाख हेक्टेयर था। दूसरे अनुमान के अनुसार, फसल वर्ष 2019-20 में गेहूं, चावल, मोटे अनाज और दलहन आदि सहित कुल खाद्यान्न उत्पादन रिकॉर्ड 29 करोड़ 19.5 लाख टन होने का अनुमान है, जो पिछले वर्ष 28 करोड़ 52.1 लाख टन से कहीं अधिक होगा। इस बार चालू वर्ष के रबी सत्र में 14 करोड़ 23.6 लाख टन और खरीफ सत्र में 14 करोड़ 96 लाख टन अनाज की पैदावार होने के अनुमान हैं।

धान का उत्पादन-पिछले साल के 11 करोड़ 64.8 लाख टन से मामूली वृद्धि के साथ इस साल 11 करोड़ 74.7 लाख टन होने का अनुमान है, जबकि विभिन्न अनाजों का उत्पादन 26 करोड़ 31.4 लाख टन से बढ़कर 26 करोड़ 89.3 लाख टन होने का अनुमान है।

दालों का उत्पादन- आंकड़ों के अनुसार, इस साल दलहन उत्पादन दो करोड़ 30.2 लाख होने का अनुमान है जो पिछले साल दो करोड़ 20.8 लाख टन था। वर्ष 2019-20 में तिलहन उत्पादन बढ़कर तीन करोड़ 41.8 लाख टन होने का अनुमान है जो पिछले साल तीन करोड़ 15.2 लाख टन था। गन्ना- नकदी फसलों में गन्ने का उत्पादन उक्त अवधि में पहले के 40 करोड़ 54.1 लाख टन से घटकर 35 करोड़ 38.4 लाख टन रह जाने का अनुमान है।

कपास-वर्ष 2018-19 में कपास का उत्पादन पहले के दो करोड़ 80.4 लाख गांठ से बढ़कर चालू वर्ष में तीन करोड़ 48.9 लाख गांठ (170 किलो प्रत्येक) हो जाने का अनुमान है। जबकि जूट / मेस्टा उत्पादन पिछले साल के 98 लाख गांठ (एक गांठ- 180 किग्रा) के स्तर पर ही बने रहने की उम्मीद है। खाद्यान्न उत्पादन के अंतिम अनुमान से पहले मंत्रालय, चार अग्रिम अनुमान जारी करता है।

इस विपणन वर्ष में 50 लाख टन के पार पहुंच सकता है चीनी निर्यातः इस्मा

नयी दिल्ली। आईपीटी नेटवर्क

चीनी उद्योग संगठन इस्मा ने मंगलवार को कहा कि भारत का चीनी निर्यात सितंबर में समाप्त होने वाले मौजूदा चीनी विपणन वर्ष में 50 लाख टन के स्तर को लांघ सकता है। वैश्विक स्तर पर इस समय चीनी की 80 से 90 लाख टन कमी का अनुमान है। इस्मा ने मंगलवार को यह जानकारी दी। चालू वर्ष के लिए, सरकार ने अधिशेष चीनी स्टॉक से निपटने के लिए अधिकतम स्वीकार्य निर्यात कोटा (एमएईक्यू) के तहत 60 लाख टन चीनी निर्यात की अनुमति दी है। चीनी विपणन वर्ष 2018-19 (अक्टूबर-सितंबर) के दौरान देश से चीनी निर्यात 38 लाख टन तक रहा था, जबकि इस दौरान चीनी निर्यात का अनिवार्य कोटा 50 लाख टन तय हुआ था। इस्मा के अनुसार 15 फरवरी 2020 तक देश में चीनी उत्पादन 1.70 करोड़ टन तक पहुंच चुका है, जो कि पिछले साल इसी अवधि में 2.19 करोड़ टन रहा था।

इंडियन शुगर मिल्स एसोसिएशन (इस्मा) के अनुसार, इस समय कच्ची और साफ चीनी की वैश्विक कीमतें तीन महीने पहले की तुलना में 20-25 प्रतिशत अधिक हैं। तीन महीने पहले भारत ने एमएईक्यू के तहत 60 लाख टन कोटा से अपना निर्यात शुरू किया था। बयान में कहा गया है, "आने वाले महीनों में भारतीय चीनी निर्यात में तेजी आ

सकती है, और पूरे चीनी सत्र में एमएईक्यू के तहत 50 लाख टन से अधिक निर्यात हो सकता है।" बाजार रपट के अनुसार भारत से लगभग 16 लाख टन चीनी का निर्यात किया जा चुका है और निर्यात के लिए लगभग 32 लाख टन के अनुबंध पर हस्ताक्षर किए गए हैं। उपलब्ध रिपोर्टों के अनुसार, कुछ चीनी मिलें अपने आवंटित निर्यात कोटा से चीनी का निर्यात नहीं करने की योजना बना रहे हैं। वहीं इसमें से कुछ ने अपने एमएईक्यू का एक हिस्सा सरकार को वापस सौंप दिया है। अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में विशेषज्ञों के अनुसार, वैश्विक बाजार में विपणन वर्ष 2019-20 में 80 से 90 लाख टन चीनी की कमी का अनुमान है तथा कम उत्पादन के कारण थाईलैंड के निर्यात में 30-40 लाख टन की कमी होने की संभावना है। देश के सबसे बड़े चीनी उत्पादक राज्य - महाराष्ट्र में चीनी का उत्पादन - इस साल 15 फरवरी तक घटकर 43.3 लाख टन रह गया, जबकि पिछले साल इसी अवधि में राज्य में 82.9 लाख टन चीनी का उत्पादन हो गया था।

देश के दूसरे सबसे बड़े चीनी उत्पादक राज्य उत्तर प्रदेश में उत्पादन एक साल पहले के 63.9 लाख टन की तुलना में बढ़कर अब तक 66.3 लाख टन तक हो चुका है। देश का तीसरा सबसे बड़ा चीनी उत्पादक राज्य कर्नाटक है। इसमें चीनी उत्पादन पहले के 38.7 लाख टन से घटकर 30.8 लाख टन रह गया। गुजरात में चीनी का उत्पादन 5,95,000 टन, बिहार में 5,08,00 टन, पंजाब में 3,72,000 टन, हरियाणा में 3,51,000 टन, उत्तराखंड में 2,41,000 टन, मध्य प्रदेश में 3,51,000 टन तथा आंध्र प्रदेश और तेलंगाना में इस साल 15 फरवरी तक 3,06,000 टन का चीनी उत्पादन हुआ है। उद्योग संगठन इस्मा ने इस साल चीनी उत्पादन 2.60 करोड़ टन रहने का अनुमान लगाया है जो उत्पादन वर्ष 2018-19 में 3.31 करोड़ टन रहा था।

टीवी, एसी, फ्रिज खरीदने का है प्लान तो ज्यादा खर्च को रहें तैयार, लगेगा कोरोना का डंक

कोलकाता। एजेंसी

जल्द टेलिविजन, एयर कंडीशनर, रेफ्रिजरेटर या स्मार्टफोन खरीदने की सोच रहे हैं तो आपको कोरोना का डंक लग सकता है। कई मॉडल्स के दाम बढ़ सकते हैं क्योंकि कंपनियां कोरोना वायरस प्रभावित चीन से आयात होने वाले कॉम्पोनेंट्स और फिनिश्ड प्रॉडक्ट्स की कमी से जूझ रही हैं। दामों में इसी महीने इजाफा देखने को मिल सकता है।

कितनी बढ़ेंगी कीमतें?

इंडस्ट्री के सीनियर एग्जिक्यूटिव्स ने कहा कि कंपनियां डिस्काउंट और प्रमोशनल ऑफर्स घटा रही हैं जिससे उपभोक्ताओं के लिए कीमतें 3-5 फीसदी तक बढ़ जाएंगी। टेलिविजन जैसे कुछ प्रॉडक्ट्स के दाम 7-10 फीसदी तक बढ़ सकते हैं क्योंकि भारी कमी के चलते इसके मेन कॉम्पोनेंट- टीवी पैनल की इंटरनैशनल प्राइस पहले ही 15-20 प्रतिशत तक बढ़ चुकी है।

आईफोन की सप्लाई बाधित

ऐपल ने रिवाइज्ड इनवेस्टर गाइडेंस जारी कर बताया कि दुनियाभर में आईफोन की सप्लाई अस्थायी तौर पर बाधित रहेगी क्योंकि चीन में कंपनी के

मैन्युफैक्चरिंग पार्टनर्स पहले के अनुमान के मुकाबले सुस्त रफ्तार से उत्पादन बढ़ा रहे हैं। इंडस्ट्री के दो एग्जिक्यूटिव्स ने बताया कि भारत में एपल डिस्ट्रिब्यूटर्स अपने महत्वपूर्ण ट्रेड पार्टनर्स को आईफोन की कमी का संकेत दे चुके हैं और इस समस्या के अगले एक महीने तक बरकरार रहने की आशंका है। ऐपल के एक एक्सक्लूसिव रिटेलर ने बताया कि आईफोन की कमी के चलते अगले कुछ दिनों तक ईकॉमर्स प्लैटफॉर्म्स और स्टोर्स पर डिस्काउंट मिलना बंद हो सकता है। ऐपल इंडिया ने इस संबंध में सवालों के जवाब नहीं दिए।

सेल्स सपॉर्ट अमाउंट घटेगा

जापानी एसी कंपनी डायकिन ने रिटेलरों को बता दिया है कि वह फरवरी से सेल्स सपॉर्ट अमाउंट घटाकर कीमत 3-5 प्रतिशत बढ़ाएगी। सेल्स सपॉर्ट अमाउंट को डिस्काउंट की तरह दिया जाता है। कंपनी के इंडिया एमडी के जे जावा ने कहा कि एक्सचेंज रेट में बदलावों, कंप्रेसर पर हाल में ड्यूटी बढ़ाए जाने और कोरोना वायरस के कारण चीन ही नहीं, थाइलैंड और मलयेशिया से भी सप्लाई में बाधा आने के कारण ऐसा करना पड़ेगा।

चीन के कन्साइनमेंट्स में देरी

गोदरेज अप्लायंसेज के बिजनस हेड कमल नंदी ने कहा, '3-5 प्रतिशत कीमत बढ़ना तो तय है। चीन से आने वाले सभी कन्साइनमेंट में देर हो रही है।' नंदी कंज्यूमर इलेक्ट्रॉनिक्स ऐंड अप्लायंसेज मैन्युफैक्चरर्स असोसिएशन (CEAMA) के अध्यक्ष भी हैं। उन्होंने कहा कि सप्लाई में बाधा आ रही है तो डिस्काउंट और ऑफर का खत्म होना तो तय ही है।

डिस्काउंट्स और प्रमोशंस में आएगी कमी

वहीं स्मार्टफोन की एक बड़ी रिटेलर ने कहा कि कुछ ब्रैंड्स ने डिस्काउंट्स और प्रमोशंस में कमी आने का संकेत दिया है, जिससे सप्लाई नॉर्मल होने तक कुछ मॉडल्स की कीमत बढ़ सकती है। इंडस्ट्री के एग्जिक्यूटिव्स ने कहा कि चीन में आने-जाने पर लगी बंदिशों के कारण कामगार चाइनीज न्यू ईयर की लंबी छुट्टियों के बाद कारखानों में नहीं पहुंच पा रहे हैं और कारखाने 30-60 प्रतिशत क्षमता से ही चल रहे हैं। उन्होंने कहा कि कम से कम तीन हफ्तों का प्रॉडक्शन प्रभावित हुआ है।

टीवी के दाम भी मार्च में चढ़ेंगे

अधिकारियों ने टीवी के दाम भी मार्च में चढ़ सकने की बात की। कोडक और थॉमसन के टीवी बेचने वाली सुपर प्लास्ट्रॉनिक्स के सीईओ अवनीत सिंह मारवाह ने कहा, 'हमने कम स्टॉक के कारण डिस्काउंट रोक दिया है।' शाओमी ने पिछले सप्ताह एक स्मार्टफोन मॉडल का दाम 500 रुपये बढ़ाया था, वहीं कुछ ब्रांड्स ने कहा कि वे असर खुद झेलने की कोशिश कर रहे हैं।

चीन में स्थिति जल्द नहीं सुधरने पर प्रमुख औषधि रसायनों के बढ़ सकते हैं दाम

नयी दिल्ली। एजेंसी

औषधि कंपनी जायडस समूह के चेयरमैन पंकज पटेल ने कहा है कि चीन में कोरोना वायरस की स्थिति अगर जल्दी नहीं सुधरती है तो दवाओं में उपयोग होने वाले प्रमुख रसायनों की कीमतें बढ़ सकती हैं। थोक दवाओं के कुल आयात में चीन की हिस्सेदारी 67.56 प्रतिशत है। पटेल ने कहा, "अगर चीन में स्थिति जल्दी नहीं सुधरी तो दवाओं में कच्चे माल के रूप में उपयोग होने वाले प्रमुख रसायनों की कीमतें बढ़ सकती हैं।" वित्त मंत्री निर्मला सीतामण ने मंगलवार को चीन में फैसले खतरनाक कोरोना वायरस को देखते हुए विभिन्न उद्योगों के प्रतिनिधियों के साथ समीक्षा बैठक की। इसमें औषधि, कपड़ा, रसायन, इलेक्ट्रॉनिक्स और आईटी हार्डवेयर, सौर, वाहन, सर्जिकल उपकरण, पेंट, उर्वरक, दूरसंचार, मोबाइल विनिर्माण, खाद्य तेल, पोत परिवहन एवं पर्यटन समेत विभिन्न उद्योगों के प्रतिनिधि शामिल हुए। उन्होंने कहा कि सरकार कोरोना वायरस का घरेलू उद्योगों पर पड़ने वाले प्रभाव से निपटने के लिये जल्दी ही उपायों की घोषणा करेगी। औषधि विभाग पहले ही स्थिति का आकलन करने के लिये उच्च स्तरीय समिति गठित कर चुका है। आधिकारिक सूत्रों के अनुसार भारतीय औषधि कंपनियों ने समिति को सूचित किया है कि उनके पास फिलहाल दो से तीन महीने का भंडार है। उल्लेखनीय है कि पड़ोसी देश से पिछले 20-25 दिनों से कोई आपूर्ति नहीं है। इसका मुख्य कारण चीन में नव वर्ष का अवकाश और उसके बाद कोरोना वायरस का फैलना है।

नौकरी छूट गई है तो बिना किसी दस्तावेज के 75% तक निकाल सकते हैं पीएफ

नई दिल्ली। एजेंसी

अगर आपकी नौकरी छूट गई है और आप एक महीने से बेरोजगार हैं तो अपने पीएफ अकाउंट से 75 फीसद पैसे निकाल सकते हैं। ईपीएफओ ने ट्वीट करके यह जानकारी दी है। नियम के मुताबिक यदि आप एक महीने तक बेरोजगार रहते हैं तो आप अपनी पीएफ अकाउंट की 75 फीसदी रकम को निकाल सकते हैं। ईपीएफओ के मुताबिक बेरोजगारी की स्थिति में पीएफ क्लेम के लिए आपको किसी दस्तावेज की भी जरूरत नहीं है। बता दें ईपीएफओ ने दिसंबर 2018 में ही इस संबंध में नोटिफिकेशन जारी किया था। इस नोटिफिकेशन के मुताबिक कोई भी खाताधारक एक महीने से ज्यादा बेरोजगार रहने पर पीएफ खाते में जमा कुल राशि का 75 फीसद निकाल सकता है। इतनी रकम निकालने के बाद भी आपका पीएफ अकाउंट पहले की तरह ही चलता रहेगा और आपको निकाली हुई राशि खाते में दोबारा जमा करने की भी जरूरत नहीं है।

चीन में कोरोना वायरस के प्रकोप से खत्म हो सकता है भारतीय दवा कंपनियों का स्टॉक

हैदराबाद। एजेंसी

इंडिया फार्मास्युटिकल एलायंस (आईपीए) ने चीन से कच्चे माल के आयात की स्थिति को 'गंभीर' बताते हुए कहा कि भारतीय दवा उद्योग के पास केवल दो से तीन महीनों के लिए सक्रिय फार्मास्युटिकल घटकों (एपीआई) का स्टॉक हैं। आईपीए के महासचिव सुदर्शन जैन ने बायोएशिया 2020 के मौके पर कहा कि वे लोग इस मुद्दे पर केंद्र के साथ संपर्क में हैं और कुछ एपीआई विनिर्माण इकाइयों के लिए तेजी से पर्यावरणीय मंजूरी की मांग कर रहे हैं, ताकि चीन पर निर्भरता कम हो।

जैन ने बताया कि भारत चीन से 17,000 करोड़ रुपये के एपीआई का आयात करता है। चीन इस समय कोरोना वायरस से पीड़िता है और इस कारण उसका विदेश व्यापार बुरी तरह प्रभावित हुआ है। उन्होंने कहा, 'यह बेहद गंभीर स्थिति है। इस बात का पूरी तरह अंदाज कोई नहीं लगा सकता है कि क्या होने वाला है। हमारे पास दो से तीन महीने की खेप है।' जैन ने मार्च से कुछ राहत मिलने की उम्मीद जताई। उन्होंने कहा, 'यदि हमें मार्च के पहले सप्ताह (चीन से) से आपूर्ति मिलने लगी, तो हम समस्या से बाहर आने में सक्षम हो सकते हैं।' हालांकि, उन्होंने जोड़ा कि इस बात का अनुमान लगाना बेहद कठिन है कि हालत कब सुधरेंगे।

दूध प्रसंस्करण क्षमता दोगुना करने में केन्द्र मदद करेगा

नयी दिल्ली। एजेंसी

केंद्र सरकार ने कहा कि वह वर्ष 2025 तक दुग्ध प्रसंस्करण क्षमता को 5.35 करोड़ टन से बढ़ाकर 10.8 करोड़ टन करने की सुविधा प्रदान करेगी। एक सरकारी बयान में कहा गया है कि इस क्षेत्र में निजी निवेश को और अधिक प्रोत्साहित करने के लिए पशुपालन और डेयरी विभाग, खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्रालय, कृषि विभाग, कृषि, सहकारिता और किसान कल्याण विभाग, ग्रामीण विकास विभाग और राज्य सरकारों की योजनाओं के माध्यम से प्रसंस्करण सुविधाओं को बढ़ावा देने के लिए कई तरह की सुविधा प्रदान की जाएगी। भारत में दुग्ध उत्पादन में पिछले पांच वर्षों से 6.4 प्रतिशत की दर से वृद्धि हो रही है और यह वर्ष 2014-15 के 14.63 करोड़ टन से बढ़कर वर्ष 2018-19 में 18.77 करोड़ टन हो गया है।

पशुपालन और डेयरी विभाग

के अनुसार किसानों के पास उपलब्ध विपणन योग्य अतिरिक्त दूध में से केवल 36 प्रतिशत संगठित क्षेत्र द्वारा सहकारिता और निजी क्षेत्र के माध्यम से समान मात्रा में बेचा जा रहा है। शेष 64 प्रतिशत दूध को भी विभिन्न तरीकों से संगठित क्षेत्र के जरिए बेचे जाने की व्यवस्था करने की आवश्यकता है। विज्ञप्ति के अनुसार पिछले दो वर्षों में सहकारी क्षेत्र में दूध की खरीद लगभग 9 प्रतिशत वार्षिक की दर से बढ़ी है। दूध का लगभग 54 प्रतिशत हिस्सा बेचने को बाजार में पहुंचाया जाता है जबकि 46 प्रतिशत गांवों में स्थानीय स्तर पर ही खप जाता है। इसने कहा है कि लोगों के उपयोग के नजरिए से सुरक्षित बनाए जाने के लिए गांव और डेयरी संयंत्रों के स्तर पर आवश्यक जांच सुविधाएं प्रदान करके दूध की गुणवत्ता में सुधार के लिए हाल ही में विशेष कार्यक्रम भी शुरू किया गया है। विभाग ने कहा कि वह निरंतर आनुवांशिक सुधार और लागत घटाकर दुग्ध उत्पादन में वृद्धि करने के प्रयासों में जुटा है।

स्वामी/मुद्रक/प्रकाशक सचिन बंसल द्वारा अपनी दुनिया प्रिंटर्स, 13, प्रेस काम्पलेक्स, ए.बी. रोड, इंदौर से मुद्रित एवं 18, सेक्टर-डी-2, सांवेर रोड, इंडस्ट्रीयल एरिया, जिला इंदौर (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादक- सचिन बंसल

सूचना/चेतावनी- इंडियन प्लास्ट टाइम्स अखबार के पूरे या किसी भी भाग का उपयोग, पुनः प्रकाशन, या व्यावसायिक उपयोग बिना संपादक की अनुमति के करना वर्जित है। अखबार में छपे लेख या विज्ञापन का उद्देश्य सूचना और प्रस्तुतिकरण मात्र है। अखबार किसी भी प्रकार के लेख या विज्ञापन से किसी भी संस्थान की सिफारिश या समर्थन नहीं करता है। पाठक किसी भी व्यावसायिक गतिविधि के लिए स्वविवेक से निर्णय करें। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र इंदौर, मप्र रहेगा।